তুলা লগ্নফল

अनुक्रमणिका

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालवित, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयंन चक्षुर्निरुक्त श्रोत्रमुच्चते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वाग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।
यच्च किंच कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय–लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक–दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष–1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[5]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते।।—पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ।।2।।[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रर्कौ यत्र साक्षिणौ ।।3।।[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की श्रृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञान तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ।।4।।[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ।
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप-चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहाय पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों लम्बी श्रृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पुलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[4] **अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ट 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यां यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रूपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने से हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दु:ख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्य वक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्य वक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विज:॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्गमय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय(काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

1. वक्री ग्रह-(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमय: सिंहो यथा चित्रमयो नृप:।
तथा वेदावधीतोऽपिज्योतिषशास्त्रतं बिना द्विजा:॥-वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नेमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाअम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशों अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्तत: प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधै:।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

ज्योतिर्विवरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अत: समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोउयं विदुषामभीष्ट:।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

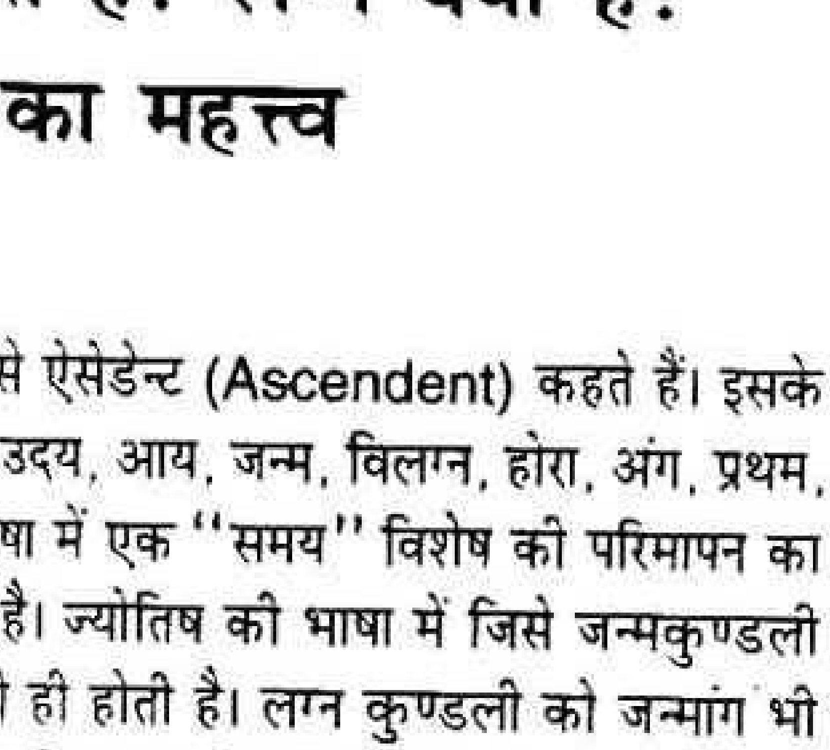
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनुलग्न।
मकरलग्न मन्द बुदि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बडे अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

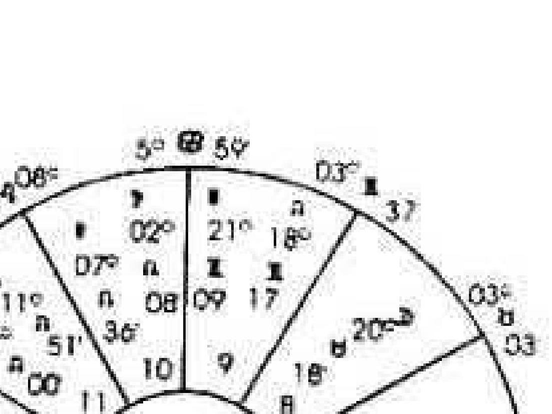
❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

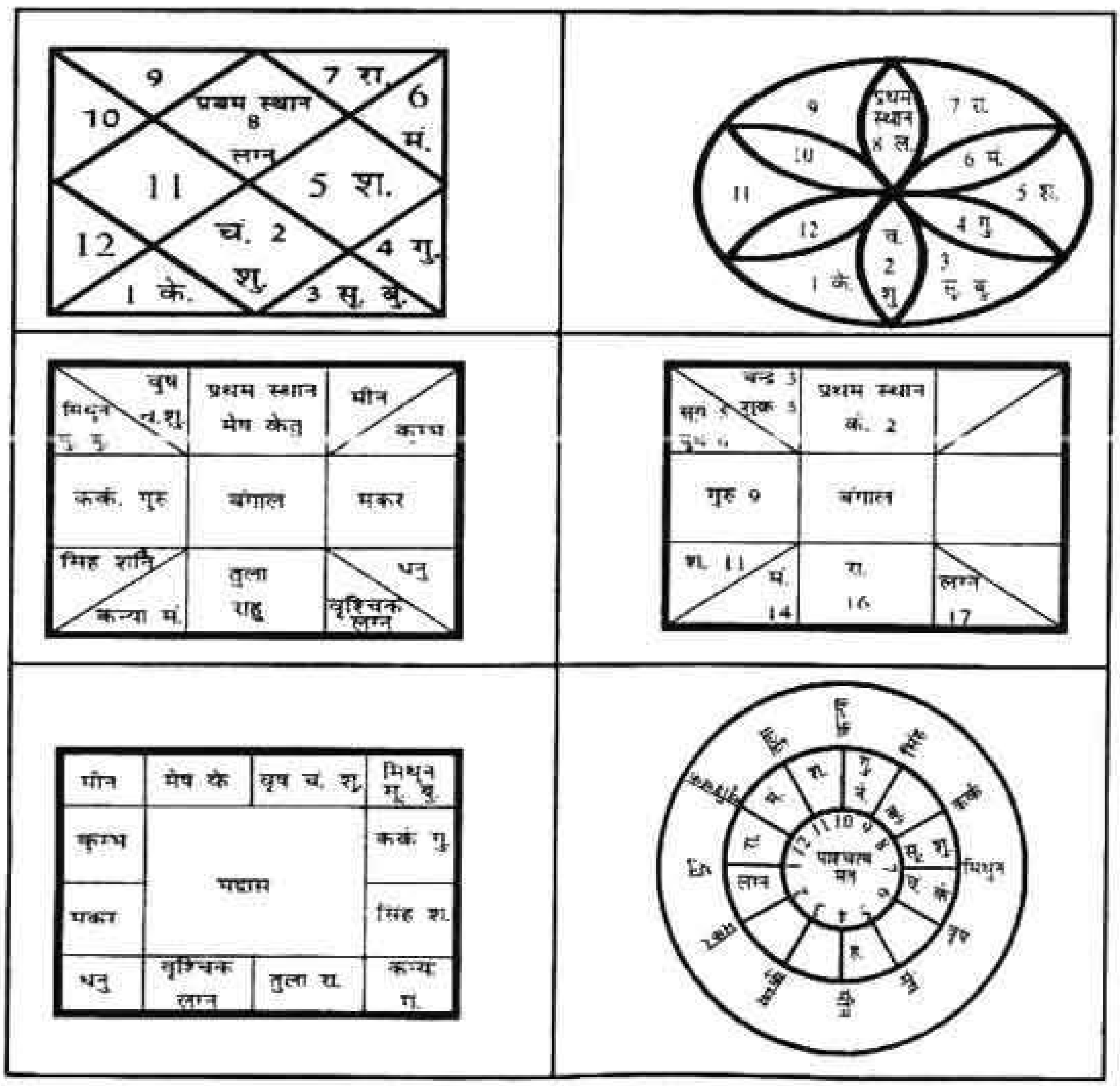


लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगणय है। वस्तुत: आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न





होते हैं। 60 में बारह का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।



क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय स्टेण्डर्ड समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगानि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

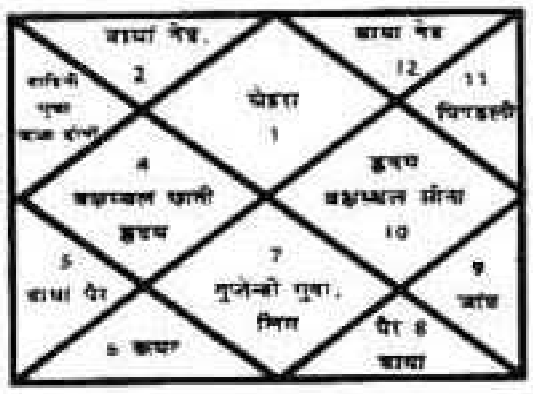
जातक ग्रन्थों के अनुसार-

यथा तनूत्वादनमन्तरैव
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः
ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

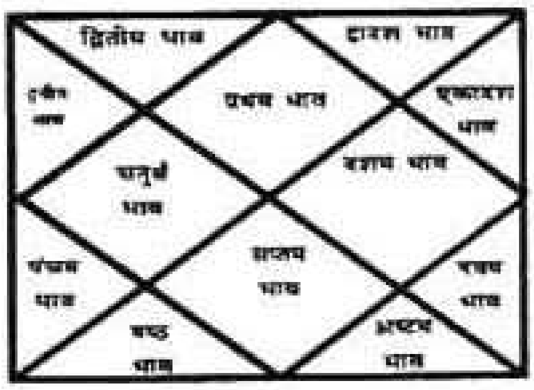
जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि-**''लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्''**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

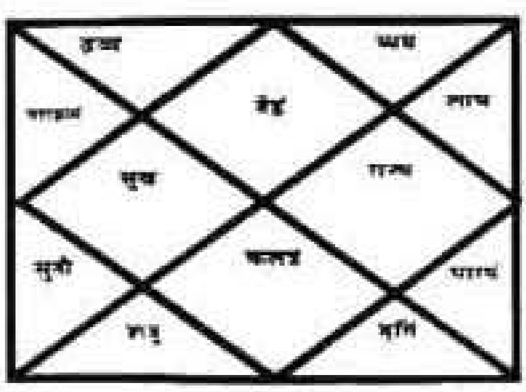


जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।



जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक में ग्रन्थों काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥



अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

तुलालग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

जीवार्कमहिजा: पापा:,
शनैश्चरबुधौ शुभौ।
भवेतां राजयोगस्य कारकौ,
चंद्रतत्सुतौ।।28।।
कुजो निहन्ति जीवाया:,
परे मारकलक्षणा:।
निहन्तार: फलान्येवं काव्यो न तु तुलाभुव:।।29।।

दूसरा पाठ

जीवार्कभूसुता: पापा: शनैश्चरबुधौ शुभौ।
भवेतां राजयोगस्य कारकौ चंद्र-चंद्रजौ।।30।।
कुजो निहन्ता जीवाया: पर मारकलक्षणा:।
निहन्तार: फलान्येवं ज्ञातव्यानि तुलाभवे।।31।।

तीसरा पाठ

राजयोगकर: साक्षादेक एवांशुमत्सुत:।।32।।

चौथा पाठ

जीवार्कमाहिजा: पापा: शनैश्चरबुधौ शुभौ।
राजयोगकर: साक्षाद् एक एवांशुमत्सुत:।।33।।

भवेतां राजयोगस्य कारकाबिन्दु तत्सुतौ।
कुजः साक्षान्न हन्ता स्यान् मारकत्वेन लक्षितः।।34।।
जीवादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि तुलाभुवः।।35।।

पहला पाठ–गुरु, रवि और मंगल पाप उत्पन्न करने वाले हैं। शनि और बुध शुभफलदायक हैं। कारण गुरु तृतीय और षष्ठ स्थानों का स्वामी है, रवि एकादश स्थान का स्वामी है, और मंगल द्वितीय और सप्तम स्थानों का स्वामी होने से मारकेश है।

शनि त्रिकोण और केन्द्र का अधिपति है और बुध त्रिकोणपति है। इसलिये ये दोनों ग्रह शुभ फल उत्पन्न करते हैं। चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी है और बुध नवम्-भाग्य स्थान का स्वामी है। इसलिए इन दोनों का योग राजयोग करने वाला होता है। मंगल द्वितीय और सप्तम स्थान का स्वामी होने से मारक है। गुरु, रवि और मंगल इनकी दशान्तर्दशाओं में मृत्यु की संभावना होती है। शुक्र लग्नेश और अष्टमेश होने से शुभ है।

दूसरा पाठ–इस पाठ में शुक्र का उल्लेख नहीं है। शेष सब पहले पाठ के अनुसार ही शुभाशुभ ग्रह हैं।

तीसरा पाठ–इस पाठ में शनि अकेला राजयोग करता है ऐसा कहा है कारण वह चतुर्थ (केन्द्र) और पंचम (त्रिकोण) का स्वामी है। इस पर से यह स्पष्ट है कि दूसरे (2) पाठ में बुध चंद्र के योग को अधिक महत्त्व नहीं दिया गया है।

चौथा पाठ–तुलालग्न हो तो, गुरु, रवि और मंगल अशुभ फल देते हैं। शनि और बुध शुभ फल देते हैं। अकेला शनि प्रत्यक्ष रूप से राजयोग कारक होता है। मंगल मारक लक्षणों से युक्त हो फिर भी स्वयं मारक नहीं बनता। गुरु आदि करके अशुभ ग्रह मारक हैं। तुलालग्न में जन्म हो तो ने इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना चाहिए।

स्पष्टीकरण

तुलालग्न हो तो गुरु, रवि और मंगल अशुभ फल देते हैं। शनि अकेला राजयोग करता है। कारण वह केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी है। बुध द्वादशेश होने से अशुभ होता है। परन्तु वह त्रिकोणपति होने से उसका शुभ ग्रह से संबंध शुभ फलदायक माना गया है। पहले पाठ के अंतिम चरण में ग्रंथकार ने कहा है कि ''काव्यो न तु तुलाभवः'' याने मंगल, गुरु और सूर्य जिस प्रकार से मारक होकर मनुष्य का नाश करने वाले होते हैं उस प्रकार शुक्र नहीं है। इस पर से ऐसा मालूम

होता है कि ग्रंथकार ने शुक्र के संबंध में यहां कुछ भी नहीं लिखा है। पाठ 2, 3, 4 इसमें तो शुक्र का कुछ भी उल्लेख नहीं है। शुक्र लग्नेश होने के नाते केन्द्राधिपति है और केन्द्राधिपति होने के कारण वह कदाचित् अशुभ फल देता है और वह क्वचित् शुभ फल देगा क्योंकि वह अष्टम स्थान का स्वामी भी है। इसलिए कदाचित् ग्रंथकार ने शुक्र का विशेष उल्लेख किया हुआ नहीं है। परंतु श्लोक 9 के अनुसार यदि अष्टमेश लग्नेश भी हो तो अशुभ फल नहीं देता ऐसा कहा है।

तुलालग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभयोग**—शनि निसर्गत: स्वयं पाप ग्रह होकर भी चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार वह शुभ माना गया है और साथ ही वह पंचम (त्रिकोण) का स्वामी भी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला होता है।
2. **शुभयोग**—बुध नैसर्गिक शुभ ग्रह है और वह नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला होता है।
3. **शुभयोग**—दशम केन्द्र का अधिपति चंद्रमा श्लोक 11 के अनुसार दूषित नहीं होता और उसका नवमाधिपति बुध से स्थानाधिपत्य साहचर्य योग हुआ हो तो वह राजयोग होता है और शुभ फलदायक होता है।
4. **शुभयोग**—शुक्र प्रथम (निर्बल) केन्द्र का स्वामी होकर अष्टम स्थान का भी स्वामी होता है। श्लोक 9 के अनुसार वह लग्नेश होने के कारण शुभ होता है और शुभ फल देनेवाला होता है।

तुलालग्न के लिए अशुभयोग

1. **अशुभयोग**—गुरु तृतीय और षष्ठ स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है।
2. **अशुभयोग**—सूर्य नैसर्गिक स्वयं पाप ग्रह है और वह एकादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ होता है और अशुभ फल करता है।
3. **अशुभयोग**—मंगल स्वयं पाप ग्रह है और वह द्वितीय तथा सप्तम स्थानों का स्वामी (मारक स्थानों का स्वामी) होने से अशुभ फल देता है।

तुलालग्न के लिए निष्फल योग

1. मंगल-बुध

तुलालग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र-शनि, 2. शनि अकेला, 3. बुध-शनि (श्रेष्ठ) दो त्रिकोणेश का केन्द्रेश के साथ संबंध होता है 4. शनि-चंद्रमा, 5. चंद्र-बुध, 6. बुध-शुक्र, 7. मंगल-शनि (निकृष्ट और सदोष) कारण मंगल मारकेश होता है और दो मारक स्थानों का स्वामी है।

तुलालग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, अष्टमेश	–	शुक्र
2.	धनेश, सप्तमेश	–	मंगल
3.	पराक्रमेश, षष्ठेश	–	गुरु
4.	सुखेश, पंचमेश	–	शनि
5.	भाग्येश, खर्चेश	–	बुध
6.	राज्येश	–	चंद्र
7.	लाभेश	–	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-शनि, 9-बुध
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-गुरु, 8-शुक्र, 12-बुध
10.	केन्द्राधिपति	–	1-शुक्र, 4-शनि, 7-मंगल, 10-चंद्र
11.	पणकर के स्वामी	–	2-मंगल, 5-शनि, 8-शुक्र, 11-सूर्य
12.	आपोक्लिम	–	3-गुरु, 6-शनि, 9, 12-बुध
13.	त्रिकेश	–	6-गुरु, 8-शुक्र, 12-बुध
14.	उपचय के स्वामी	–	3, 6-गुरु, 10-चंद्र, 11-सूर्य
15.	शुभ योग	–	1. शनि, 2. बुध, 3. चंद्र+बुध, 4. शुक्र
16.	अशुभ योग	–	1. गुरु, 2. सूर्य, 3. मंगल
17.	निष्फल योग	–	1. मंगल+बुध
18.	सफल योग	–	1. शुक्र+शनि, 2. शनि अकेला, 3. बुध+शनि, 4.शनि+चंद्र, 5. चंद्र+बुध 6. बुध+शुक्र, 7. मंगल+शनि (निकृष्ट सदोष)

19.	**राजयोग कारक**	–	चंद्र, बुध, शनि
20.	**मारकेश**	–	मंगल मारकेश, द्वितीय मारकेश गुरु
21.	**पापफलद**	–	सूर्य, गुरु, मंगल, परमपापी-गुरु
22.	**शुभयुति**	–	
23.	**अशुभयुति**	–	

विशेष-तुलालग्न के लिए मुख्य मारकेश मंगल पर द्वितीय मारकेश के रूप में गुरु भी काम करता है।

❑❑❑

तुलालग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	– तुला
2.	लग्न चिह्न	– तराजू
3.	लग्न स्वामी	– शुक्र
4.	लग्न तत्त्व	– वायु तत्त्व
5.	लग्न उदय	–
6.	लग्न स्वरूप	– चर
7.	लग्न अवधि	–
8.	लग्न दिशा	– पश्चिम
9.	लग्न लिंग व गुण	– पुरुष, रजोगुणी
10.	लग्न जाति	– शुक्र
11.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	– क्रूर स्वभाव, त्रिधातु प्रकृति
12.	लग्न का अंग	– गुप्तांग
13.	जीवन रत्न	– हीरा
14.	अनुकूल रंग	– सफेद
15.	शुभ दिवस	– शुक्रवार
16.	अनुकूल देवता	– लक्ष्मी/संतोषी माता
17.	व्रत, उपवास	– शुक्रवार
18.	अनुकूल अंक	– छः
19.	अनुकूल तारीखें	– 6/15/24
20.	मित्र लग्न	– मिथुन, मकर, कुम्भ, धनु, कर्क
21.	शत्रु लग्न	– सिंह

22.	**व्यक्तित्व**	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	**सकारात्मक तथ्य**	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	**नकारात्मक तथ्य**	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्यः शुक्रः -शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति -शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य) -शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी -शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् -ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् -शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है-शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने'**[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य तष तपति तद्य देष एत्तपत्त्सि तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी।।-शतपथ ब्राह्मण 4/2/1 मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष-श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष-शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमामाः शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रातिग्मतेजसः।। -अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुखः। ऋग्वेद 5/40/9

22.	**व्यक्तित्व**	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	**सकारात्मक तथ्य**	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	**नकारात्मक तथ्य**	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्यः शुक्रः -शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति -शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य)

-शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी -शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् -ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् -शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने'**[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन दैवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य तष तपति तद्य देष एतपत्सि तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी।।–शतपथ ब्राह्मण 4/2/1 मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष–श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमामाः शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रातिग्मतेजसः।। –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुखः। ऋग्वेद 5/40/9

22.	**व्यक्तित्व**	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	**सकारात्मक तथ्य**	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	**नकारात्मक तथ्य**	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्यः शुक्रः -शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति -शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य)

-शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी -शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् -ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् -शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने'**[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य
तष तपति तद्य देष एतपत्सि तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी।।–शतपथ ब्राह्मण 4/2/1
मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष–श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमामा: शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रातिग्मतेजसः।। –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुखः। ऋग्वेद 5/40/9

22.	**व्यक्तित्व**	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	**सकारात्मक तथ्य**	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	**नकारात्मक तथ्य**	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्य: शुक्र: –शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति –शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्ने:) एवैतानि नामानि (छत्री अक्र: शुक्र: ज्योति: सूर्य)

–शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी –शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् –ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् –शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने'**[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य
तष तपति तद्य देष एतपत्त्सि तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी।।–शतपथ ब्राह्मण 4/2/1
मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष–श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमामा: शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धूमकेतु: रुद्रातिग्मतेजस:।। –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुख:। ऋग्वेद 5/40/9

22.	**व्यक्तित्व**	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	**सकारात्मक तथ्य**	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	**नकारात्मक तथ्य**	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्य: शुक्र: -शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति -शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्ने:) एवैतानि नामानि (छत्री अक्र: शुक्र: ज्योति: सूर्य)

-शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी -शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् -ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् -शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये '**अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने**[4]' मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य तष तपति तद्य देष एत्तपत्सि तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी।।–शतपथ ब्राह्मण 4/2/1 मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष–श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमामा: शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतु: रुद्रातिग्मतेजस:।। –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुख:। ऋग्वेद 5/40/9

आचार्य शुक्र

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं (तै. सं. 2/5/8/5, तां. ब्रा. 7/5/20)। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा बरसती रहती है। मृतसंजीवनी विद्या के बल पर ये मरे हुए दानवों को जिला देते हैं (महाभा., आदि. 76/8)। असुरों के कल्याण के लिये इन्होंने एक ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया, जिसे आज तक कोई कर नहीं सका था। इस व्रत से इन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। औढरदानी ने वरदान दिया कि तुम देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई मार नहीं सकेगा (मत्स्य पु., अ. 47)। अन्य वरदान देकर भगवान ने इन्हें धनों का अध्यक्ष और प्रजापति भी बना दिया।

इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक में जितनी सम्पत्तियां हैं, सबके स्वामी बन गए (महाभा., आदि 78/39)। सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य तो समग्र औषधियों, मंत्रों और रसों के भी स्वामी हैं (मत्स्य पु. 47/64)। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्तियों को अपने शिष्य असुरों को प्रदान कर दिया था (मत्स्य पु. 67/65)। दैत्यगुरु शुक्राचार्य का सामर्थ्य अद्‌भुत है।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, अभी अवृष्टि, कभी भय और कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों के योग-क्षेम का कार्य पूरा करते हैं (महाभा. आदि. 66/42-44)। ग्रह के रूप में ये ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते हैं (महाभा., सभा. 11/29)। लोकों के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं। ये वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं (श्रीमद्‌भा. 5/22/12)। इनके अधिदेवता इन्द्र और प्रत्याधिदेवता इन्द्राणी हैं।

वर्ण–शुक्राचार्य का वर्ण श्वेत है (मत्स्य.पु. 94/5)।

वाहन–इनके वाहन रथ में अग्नि के समान वर्ण वाले आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथ पर ध्वजाएं फहराती रहती हैं (मत्स्य.पु. 127/7)।

आयुध–दण्ड इनका आयुध है (मत्स्य.पु. 94/5)।

परिवार–शुक्राचार्य की दो पत्नियां हैं। एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनके चार पुत्र हुए–त्वष्ठा, वरुत्री, शंड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ।

❑❑❑

शुक्र का खगोलीय स्वरूप

सौरमण्डल में बुध के बाद दूसरा स्थान शुक्र का है। शुक्र ग्रह सूर्य से 10,80,00,000 किमी. की दूरी पर स्थित है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 225 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। इसका व्यास 12,600 किमी. है तथा गुरुत्व लगभग पृथ्वी के समान है। सूर्य तथा चंद्रमा के बाद शुक्र ही आकाश में सबसे अधिक तेजस्वी ग्रह है। इसके संबंध में सबसे विचित्र बात यह है कि चंद्रमा की भांति इसकी भी कलायें हैं, जो किसी भी दूरदर्शी यंत्र द्वारा सुगमता से देखी जा सकती हैं। शुक्र सूर्योदय के समय पूर्व में अथवा सूर्यास्त के समय पश्चिम में देखा जाता है। इसे ''संध्या'' तथा ''प्रभात का तारा'' भी कहते हैं। शुक्र ग्रह पूर्व में अस्त होने के 75 दिन बाद उदय होता है। उदय के 240 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है। पश्चिम में अस्त होने के 6 दिन बाद पूर्व में उदित होता है। पूर्वादय में 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 240 दिन बाद पुन+ पूर्व में अस्त होता है। शुक्र ग्रह सूर्यास्त के एक-दो घण्टे तक सूर्योदय से एक-दो घण्टे पूर्व ही दिखाई देने लगता है। अर्थात् सूर्य को छोड़कर 45 अंश अधिक दूर कभी नहीं जाता।

शुक्र को भृगु, कवि, सीत, आच्छा, ऊशना, कारक, आस्फुजित, दानवेज्य, दैत्यगुरु आदि विभिन्न नाम दिये गये हैं।

शुक्र की गति–यह अपनी धुरी पर 23 घण्टा 21 मिनट में पूरा घूम लेता है तथा सूर्य की परिक्रमा 224 दिन 42 घटी 2 पल में पूरी कर लेता है। इसकी गति एक सैकेण्ड में 22 मील है। स्थूल मान से यह एक राशि पर एक मास, एक नक्षत्र पर 11 दिन रहता है।

यह एक वर्ष वक्री और एक वर्ष मार्गी रहता है। वक्री अवस्था में यह पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होता है। यह मार्गी अवस्था में सूर्य से 9 डिग्री अंश पर और वक्री अवस्था में 8 डिग्री अंशों पर अस्त रहता है। इसी प्रकार मार्गी अवस्था में 250 और वक्री अवस्था में 248 दिन उदय रहता है। इस ग्रह की मार्गी अवस्था

510 दिन और वक्री अवस्था 45 दिन तक रहती है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर वक्री, बारहवीं पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समचारी रहता है। जब इसकी गति 75.42 होती है तब यह परम शीघ्रगामी हो जाती है। अविचारी अवस्था में यह 10 दिन तक ही रह पाता है। वक्री होने के दो दिन आगे या पीछे यह स्थिर भी प्रतिभासित होता है।

शुक्र कई बार सूर्योदय के कुछ समय पहले तेजी से चमकता हुआ पूर्व दिशा में दिखलाई पड़ता है। फलतः लोग इसे प्रभात या भोर का तारा भी कहते हैं। कई बार यह सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में भी चमकता हुआ दिखलाई देता है। ऐसी वेला में इसे "संध्या" का तारा भी कहते हैं। किन्तु शुक्र ग्रह जब भी पूर्व दिशा में अस्त होता है तो 15 दिन बाद ही उदय हो पाता है। उदय के प्रायः 250 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है। पश्चिम में अस्त होने के 9 दिन बाद पूर्व में पुनः उदित होता है। पूर्वोदय के 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 250 दिन बाद पुनः पूर्व में अस्त हो जाता है यह क्रम चलता ही रहता है।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का पौराणिक स्वरूप

दैत्यों के गुरु शुक्र का वर्ण श्वेत है। उनके सिर पर सुन्दर मुकुट तथा गले में माला है। वे श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र तथा वरमुद्रा सुशोभित रहती है। शुक्राचार्य की दो पत्नियां हैं। एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनको चार पुत्र हुए–त्वष्टा, वरूत्री, शंड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ।

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा सर्वदा बरसती है। इन्होंने भगवान शिव की कठोर तपस्या करके उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। उसके बल से ये युद्ध में मरे हुए दानवों को जिन्दा करते थे (महाभारत आदि. 73/8)

मत्स्य पुराण के अनुसार शुक्राचार्य ने असुरों के कल्याण के लिए ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया जैसा आज तक कोई नहीं कर सका। इस व्रत से इन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। शिव ने इन्हें वरदान दिया कि तुम युद्ध में देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा। भगवान शिव ने इन्हें धन का भी अध्यक्ष बना दिया। इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक की सारी सम्पत्तियों के स्वामी बन गये।

महाभारत आदिपर्व (78/39) के अनुसार सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य औषधियों, मंत्रों तथा रसों के भी स्वामी हैं। इनकी सामर्थ्य अद्भुत है। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति अपने शिष्य असुरों को दे दी और स्वयं तपस्वी-जीवन ही स्वीकार किया।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, कभी अवृष्टि, कभी भय, कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों

के योग-क्षेम का कार्य पूरा करते हैं। ये ग्रह के रूप में ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते हैं। लोकों के लिए ये अनुकूल ग्रह हैं तथा वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं। इनके अधिदेवता इन्द्राणी तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं। मत्स्य पुराण (14/4) के अनुसार इनका वाहन रथ है, उसमें अग्नि के सामन आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथ पर ध्वजाएं फहराती रहती हैं। इनका आयुध दण्ड है। शुक्र वृष और तुला राशि के स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 20 वर्ष की होती है।

शुक्र ग्रह की शान्ति के लिए गो पूजा करनी चाहिए तथा हीरा धारण करना चाहिए। चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही चीनी गौ और भूमि ब्राह्मणों को दान देनी चाहिए।

नवग्रह मण्डल में शुक्र का प्रतीक पूर्व में श्वेत पंचकोण है। शुक्र की प्रतिकूल दशा में इनकी अनुकूलता और प्रसन्नता हेतु वैदिक मंत्र–'ओउम् अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पय: सोमं प्रजापति:। ऋतेन सतयमिन्द्रियं विपान शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।' पौराणिक मंत्र–'हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।' बीज मंत्र–'ओउम द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:', तथा सामान्य मंत्र 'ओउम शुं शुक्राय नम:' है। इनमें से किसी एक का नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। कुल जप–संख्या 16000 तथा जप का समय सूर्योदयकाल है। विशेष वस्था में विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

ज्योतिषीय स्वरूप–हमारे शास्त्रों में लक्ष्मी की उत्पत्ति की तीन गाथाएं चल रहीं हैं। 1. समुद्र मंथन, 2, ज्वाला से उत्पत्ति, 3 भृगु कन्या के रूप में श्रीमाल पुराण में। ये तीनों कथायें रहस्यवाद व छायावाद से ओत-प्रोत होकर प्रतीकात्मक रही हैं। कथन का तात्पर्य है। 1. विचार मन्थन से सृजनात्मक शक्ति द्वारा श्री प्राप्ति 2. संगठनात्मक के तेज से लक्ष्मी को प्रकट करना। 3. भृगु की तपस्या से, तप से व ब्रह्मचर्य द्वारा लक्ष्मी प्राप्त करना। इन कथाओं में दो तत्त्व जल प्रकट होते हैं। इन दोनों का संबंध शुक्र से है। भृगु से लक्ष्मी के जन्म की कथा ने ही भृगु-शुक्र से लक्ष्मी का संबंध जोड़ा है।

ज्योषित शास्त्र में देव गुरु बृहस्पति को धन दायक ग्रह नहीं माना गया है। नैसर्गिक कुण्डली में भी भाग्य भवन खर्च के अधिपति गुरु हैं, अत: यह विद्यादायक हैं धन दायक नहीं है। जबकि शुक्र नैसर्गिक कुण्डली में धनेश बनता है। दोनों ही स्थान ऐश्वर्य और व्यापार से संबंधित हैं। ''व्यापारो वर्धते लक्ष्मी:'' व्यापार से लक्ष्मी बढ़ती है। ऐश्वर्य से शोभा बढ़ती है। अत: हमारे भृगु शुक्र का श्री से सम्पूर्ण संबंध है।

शुक्र का एक पर्यायवाचक नाम वन्त है। मदन है और कवि है। यह ऐश्वर्य का उपभोक्ता ग्रह है संजीवनी विद्या का सर्जक है, दैत्य गुरु है, दैत्य ही धन का

संग्रह करते थे। यह कर्म है। अत: मदन है। ऋतु बसन्त मदन उद्दीपक है। वीर्य ही संजीवनी है, वीर्य रक्षण ही प्रधान तत्त्व है। धर्मशास्त्रों की प्रत्येक क्रिया पुण्याहवाचन से प्रारम्भ होती है। उसमें ग्रहों के क्रम में ''शुक्रोंगरको बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम संहिता आदित्याद्या सर्वग्रहा+प्रीयन्ताम'' का उद्घोष क्रम, क्रमश: शुक्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, सोम और सूर्य का चयन करता है। इसका मुख्य कारण वीर्य प्रधानता है। जब आप का वीर्य ही बलवान नहीं तो आप के जीवन में क्या रहेगा? न सुख का उपयोग कर सकेंगे न काम की प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। गुरु वसा प्रधान ग्रह है जबकि शुक्र वीर्य प्रधान ग्रह है। अत: वीर्यवान व्यक्ति ही धन प्राप्त करने में समर्थ होता है। वीर्यवान बनने के लिए 25 वर्षों तक ब्रह्मचर्य आवश्यक है। अत: शुक्र से संबंधित भाग्योदय की आयु का 25वां वर्ष है। ''नाय आत्मा बलहीनेन लम्य'' आत्मा साक्षात्कारी भी बलहीन नहीं कर सकता अत: इस लोक में परलोक दोनों की प्राप्ति शुक्र की बलवत्ता से संभव मानी गई है। यही कारण रहा है कि धर्मशास्त्रों ने भी शुक्र को ही प्रमुख स्थान दिया।

शुक्र का विवेचन–शुक्र की दो राशियां उनकी अपनी हैं। 1. वृषभ और 2. तुला। वृषभ राशि में बैल का स्वरूप है तो तुला में तराजू हाथ में तौलते हुए मनुष्य का स्वरूप है।

अत: वृषभ लग्न हो चाहे राशि हो उसके जातक दृढ़ स्कंध वाले पाए जाएंगे। प्राय: गौर वर्ण से संबंधित होंगे। अपनी धुन के पक्के व कामी होंगे, ऐश्वर्यशाली बनेंगे। हठ पर दृढ़ रहेंगे। उनमें शासन क्षमता होगी भावुक होंगे और अनुचित कार्य पर पछतावा भी करेंगे। इनकी हंसी लुभावनी होगी। स्वार्थी तो होंगे पर अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का कम नुकसान करेंगे। इनमें कुछ कला झगड़ने की भी पाई जाएगी।

जबकि तुला राशि शुक्र की मूल त्रिकोणीय राशि है। तुलालग्न व राशि वाले अगर किसी के लिए 10 रुपये खर्च करेंगे तो 100 का लाभ उठाना चाहेंगे। अपने स्वार्थ को साधने में दूसरों का भरपूर नुकसान कर देंगे। ये भी विलासी व व्यसनी होंगे पर व्यापारी क्रिया में दक्ष होने से मीठा बोल कर अपना काम निकालेंगे। इंसाफ पसंद, धीरज वाले धार्मिक भी होंगे। वे न्यायाधीश भी होंगे।

शुक्र की उच्च राशि मीन जो जलग्रह है और नीच राशि कन्या अत: शुक्र प्रधान, जलविहार व घूमना पसंद करेंगे और स्त्रियों के प्रति उनका आकर्षण गहरा होगा। वे चरित्र भ्रष्ट भी बन सकते हैं। शुक्र पंच कोण का सितारा है। '' पंच कोणेतु भार्गवे'' ऐसा वर्णन है। यह दूर्वादल श्याम वर्ण का है न अधिक गोरा और न काला। गेहूंआ वर्ण कह सकते हैं।

लग्नस्थ शुक्र पर जब चंद्र व गुरु की दृष्टि हो तो वह गौर वर्ण का जातक होगा। अन्यथा कुछ कालापन लिए गेहुंआ रंग का होगा। लग्नस्थ शुक्र के पति-पत्नी में एक सा रंग कुछ कालापन का होगा। इसे चित्रभानु भी कहा गया है। अत: यह स्त्रियों जैसा आचरण करने वाला जातक होता है। स्त्रियोचित्त विभिन्न कपड़े पहनती रहती है। इसकी ऋतु बसंत है। बसंत ऋतु में ही प्राय: प्रकृति पुष्पित, सुरभित होती है। और काम उद्दीप्त होती है। इसकी देवी इंद्राणी व लक्ष्मी हैं। यह इंद्रिय है और ऐश्वर्यशाली है। वैभव सम्पन्न लोग ही भोग विलास का आनन्द उठाते हैं। इसकी दिशा पूर्व और दक्षिण है परन्तु अग्नि कोण मुख्य स्थान है। क्योंकि यह आर्द्र भी है, और आग भी है। इसमें जल व तेज का समन्वय है। इसकी जाति ब्राह्मण है। क्योंकि यह तपस्वी 25 वर्ष के ब्रह्मचर्य धारण से वीर्य परिपक्व होता है। यह रजोगुणी है, क्योंकि यह ग्रह भोग प्रधान ग्रह है। यह सदैव शुभ रहता है क्योंकि यह शुभ वर्ण का है इसमें गौरता प्रमुख पाई जाती है।

यह हमेशा मनोरंजन में आसन्न रहता है क्योंकि इसका जातक दर्शनीय शरीर वाला, सुन्दर नेत्र वाला, लहरीले केशों वाला तथा कफवान प्रधान प्रकृति वाला होता है जिस पर स्त्रियां आसक्त रहती हैं। यह कवि है, क्योंकि प्राकृतिक सौन्दर्य पर इसका अधिकार है प्रात: वेला में ही कवि व संगीतकार अपने काव्य व संगीत की साधना करते हैं।

शुक्र की बलवत्ता–प्राकृतिक कुण्डली में चतुर्थ स्थान चंद्र का है पर शुक्र 4थे भाव में बैठकर बली होता है। पुरुषों की कुण्डली, स्त्री राशियों में बैठा शुक्र जातक की कुण्डलियों में पुरुष राशि में बैठा शुक्र बलवान होता है।

चौथे भाव में शुक्र दिग्बली और 5वें भाव में हर्षबली होता है। शुक्र सप्तम भाव का कारक है। अत: सप्तमस्थ शुक्र शुभ फल नहीं देता है। ''कारको भावनाशाय'' ऐसा प्रसिद्धि है। सप्तम का शुक्र कामेच्छा बलवान करता है। शुक्र राशि के मध्य भाग में अपनी उच्च राशि में द्रेष्कोण में और नवांश कुण्डली में स्वगृह में दिन में तीसरे, चौथे, षष्ठ तथा व्यय स्थान में, तीसरे पहर में ग्रह मुहूर्त में चंद्र के साथ तथा वक्री ग्रह के साथ सूर्य के आगे गया हुआ बलवान होता है। परन्तु वक्री बुध के साथ शुक्र कर्म होता है। शुक्र का बल चंद्र तोड़ देता है। यह षष्ट स्थान में विफल रहता है। इसमें विवाद भी है।

शुक्र का उदयास्त–पूर्व का शुक्र, द्वितीय भाव लग्न और व्यय स्थान में होता है। पश्चिम का शुक्र छठवें, सातवें और आठवें स्थान में होता है।

द्वितीय भाव षष्ठ और सप्तम में यह नजर नहीं आता और लग्न, व्यय और अष्टम में दिखाई देता है। शुक्र पश्चिम की ओर उदय होता है तब यह सूर्य के पीछे

रहता है उस समय यह सांवला दिखाई देता है। जब शुक्र पूर्व की ओर हो तो सूर्य के आगे होता है इस समय यह अति तेजस्वी होता है। सूर्य के साथ बैठा शुक्र अस्त हो जाता है। शुक्र हमेशा सूर्य के आगे या पीछे घर में रहता है।

शुक्र के रत्न–शुक्र के रत्नों में मोती, हीरा व स्फटिक हैं। इसकी धातु सफेद सोना (प्लेटिनम) और चांदी है। निर्बल शुक्र को रत्न पहना कर बलवान किया जा सकता है।

शुक्र के फल

1. कन्या लग्न में नीच का शुक्र उत्तम वैभव देता है।
2. चतुर्थ स्थान में बैठा शुक्र किसी भी राशि में हो उसे उम्र सुख से गुजार देता है।
3. शुक्र धनदाता ग्रह है। शुक्र प्रधान व्यक्ति सुखी रहता है। शुक्र की दशा विंशोतरी में 20 वर्ष की होती है।
4. धन स्थान में शुक्र धनवान बनाता है।
5. तीनों लग्नों में 12वें गया शुक्र राजा के तुल्य धन देता है।
6. शनि+शुक्र का संबंध एक दूसरे का पूरक है।
7. शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा, शनि की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा धनु और मीन राशि व लग्न के जातकों को छोड़कर सभी को योग हीन बना देती है।
8. जिस भाव में शनि+शुक्र की युति होती है उस भाव के फल में प्राय: वृद्धि होती है। परन्तु 7वें भाव में यह व्यक्ति का चरित्र गिरा देती है।
9. चौथे भाव में शनि+शुक्र की युति अनेक स्त्रियों से धन प्राप्ति और दशम में हो तो राजा तुल्य वैभव देगी।
10. मकर व कुम्भलग्न में शुक्र योगकारक है। वहां शुक्र+शनि की युति ज्यादा लाभप्रद है।
11. तुला व वृष लग्नों में शनि+शुक्र युति विशेष फल नहीं करेगी। केवल शनि अकेला योग कारक होगा।
12. शुक्र से 4-8वें 12वें श., मं. या पाप ग्रह हो तो दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद रहेगा, अगर शुभ दृष्ट हो तो और बात है।
13. मं.+शु समसप्तक हो तो कामी विशेष बना देगा।

14. वक्री ग्रह स. के साथ या अन्य वक्री ग्रह बुध को छोड़ कर बैठा शुक्र वैभव से पूर्ण करेगा।

15. शुक्र की एक पाद, द्विपाद, त्रिपाद या सम्पूर्ण दृष्टि से शून्य मंगल होगा तो संतान का अभाव रहेगा।

निर्बल शुक्र को शांत करने व बलवान करने के उपाय

1. श्री यंत्र का पूजन नित्य करें।
2. श्री सूक्त या लक्ष्मी स्रोत वा कनक धारा स्रोत का पाठ करें।
3. ब्राह्मणों द्वारा शुक्र व बाधक ग्रह के जाप करवाएं।
4. नित्य 1 मुट्ठी ताजे चावल सूर्योदय से पहले बनवाकर घी शक्कर डालकर सूर्योदय से पहले गौ को दें/ गौ पालतू न हो। सफेद व काली हो तो श्रेष्ठ। ऐसा 28 रोज करें।
5. हर शुक्र को मछलियों को चुग्गा दें।
6. बीमारी हो तो हर शुक्रवार मोरों को चने चुगाएं।
7. हर शुक्र, मंगल को कुत्तों को दूध और डबल रोटी देते रहें।
8. लेख में प्रदर्शित शुक्र के रत्न धारण करें।
9. मंदिर में हर शुक्र को सफेद वस्तु, दूध, दही, चावल या शक्कर का दान करें।
10. शुक्र की अनिष्टता के परिहारार्थ दूध, जवारी का दान सतत् करते रहें। भोजन के पूर्व थाली में परोसी सभी चीजें थोड़ी-थोड़ी निकालकर सफेद गाय या सफेद बैल को खिलाएं।
11. लग्न में स्थित शुक्र अनिष्ट हो एवं सप्तम तथा दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो ऐसे जातक का विवाह 25वें साल में होता है। विवाह के बाद वह कंगाल बनता है। उसकी पत्नी उसे छोड़ देती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए घास (जवस) की चटनी बनाकर नित्य भोजन में लें। गोमूत्र रोज सेवन करें। सप्तधान्य इकट्ठा करके पंछियों को खिलाएं।
12. अनिष्ट शुक्र द्वितीय स्थान में और बृहस्पति 8, 9 या 10 में से किसी स्थान में हो तो जातक का वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहता है। पत्नी नौकरी करती हो तो उसका चरित्र भ्रष्ट होता है। जातक जीवन भर दु:खी रहता है। जातक को गुप्त रोग एवं शीघ्र वीर्यपतन के विकार होते हैं। यह अनिष्टता दूर करने के लिए प्रवाल भस्म का सेवन करें।

13. अनिष्ट शुक्र पंचम स्थान में हो एवं राहु लग्न में या सप्तम स्थान में हो तो जातक कामातुर रहता है। उसकी संतान आज्ञाकारी नहीं रहती है। चोरी का डर रहता है। इस अनिष्टता के निवारण के लिए गाय की सेवा करें। स्वयं का चरित्र शुद्ध रखें। जातक स्त्री या पुरुष दोनों ही दही-दूध से अपने गुप्तांग स्वच्छ करें। इससे आय में बढ़ोत्तरी होकर जीवन सौभाग्यशाली बनेगा।

14. शुक्र अष्टम स्थान में हो तो अनिष्ट फल देता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए सफेद सिक्का, चवन्नी, अठन्नी या रुपया सफेद पुष्प के साथ गंदे पानी में प्रवाहित करें। देवी के मंदिर में जाकर नित्य प्रार्थना करें।

15. नवम स्थान में शुक्र होने पर जातक धनी तथा उद्योगपति बनता है। उसकी बुद्धि की कुशाग्रता को बढ़ावा मिलता है। यदि नवमस्थ शुक्र अनिष्ट हो तो उसके शुभ फल न मिलकर अशुभ फल ही प्राप्त होंगे। इन अशुभ फलों की निवृत्ति के लिए चांदी के चौकोर टुकड़े कड़वे नीम के पेड़ के नीचे गाड़ दें। नवम स्थान में शुक्र के साथ चंद्र व मंगल हों तो गृह निर्माण के समय एक छोटे-से मिट्टी के पात्र में शहद भरकर यह मधुघट मकान की नींव में गाड़ दें।

16. बारहवें स्थान में शुक्र पत्नी के लिए अनिष्टकर होता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए नीले या बैंगनी रंग के कुछ फूल संध्या समय जंगल में गाड़ दें।

17. बारहवें स्थान में शुक्र एवं 2, 6, 7, 12 में से किसी एक स्थान में राहु होने पर जातक की उम्र के 25वें साल तक स्थिति कष्टकारक रहती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए काली गाय या भैंस पालें।

18. चांदी, चावल, चित्र-विचित्र रंग के वस्त्र, बछड़े सहित गाय, हीरा, रूपा, इसमें से जो संभव हो उसका दान करें।

19. वाघाटी की जड़ तावीज में धारण करें।

20. हर शुक्रवार को सफेद सीसा पानी में डालकर स्नान करें।

शनि अनिष्ट से बचने हेतु टोटके

21. कुण्डली में शनि शुभ हो तो उसे और शुभ बनाने के लिए मकान में लोहे के फर्नीचर का इस्तेमाल करें। भोजन में काला नमक और काली मिर्च का प्रयोग करें। आंखों में काजल या काला सुरमा लगाएं।

22. शनि की अनिष्टता साढ़ेसाती या ढैय्या में होने वाले कष्ट कम करने के लिए भोजन के लिए थाली में परोसे सभी पदार्थ थोड़े-थोड़े अलग निकालकर रखें। यह पदार्थ कौओं को खिलाएं।

23. संतति प्राप्ति में शनि रोड़े अटकाता हो या अनिष्ट शनि के कारण गर्भपात होता हो तो ऐसी स्त्री भोजन पूर्व थाली में परोसे सभी पदार्थ से थोड़ा-थोड़ा अलग निकालकर काले कुत्ते को खिलाए।

24. अनिष्ट शनि की अनिष्टता निवारण के लिए सरसों या तिल का एवं शनि तेल का दान करें।

25. अनिष्ट शनि होने पर उस जातक के मकान का प्रवेश द्वारा पश्चिम दिशा में होता है। जातक की आयु के 36, 42, 45, 48वें साल क्लेशदायक बीतते हैं। शिक्षा पूर्ण नहीं होती। अपच की शिकायत रहती है। ऐसे जातक सुरमा खरीदकर जमीन में गाड़ दें। सुरमा एवं बड़ की जड़ दूध में उबालकर उसका तिलक स्वयं के माथे पर करें। इससे शरीर की मानसिक एवं आर्थिक अड़चनें दूर होती हैं।

26. चतुर्थ स्थान में शनि हो, ऐसे जातक रात को दूध न पीएं। क्योंकि दूध जहरीला बनकर शनि की अनिष्टता बढ़ाता है।

27. चतुर्थ स्थान में शनि हो तो ऐसे जातक काले सांप को दूध पिलाएं, भैंस को घास खिलाएं, मजदूरों को भोजन दें। हमेशा आर्थिक तंगी रहती हो तो कुएं में कच्चा दूध डालें।

❑❑❑

तुलालग्न की चारित्रिक विशेषताएं

तुलालग्न का स्वरूप

शीर्षोदयी द्युवीर्याढ्यरूतुल: कृष्णो रजोगुणी।
पश्चिमो भूचरो घाती शूद्रो मध्यतनुद्विपात् ॥15॥

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्र/अ. 4/श्लो. 15

तुला शीर्षोदय, दिगबली, कृष्णवर्ण, रजोगुणी, पश्चिमवासी, भूमिचारी, हिंसक, शूद्रजाति, मध्यदेह है, इसका स्वामी शुक्र है।।15।।

देवब्राह्मणसाधुपूजनरत: प्राज्ञ: शुचि: स्त्रीजित:
प्रांशु सोन्नतनासिक: कृशचलद्गात्रोऽटनोऽर्थान्वित:।
हीनांग: कय-विक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुग,
बन्धूनामुपकारकद् विरुषितस्त्यक्तश्च तै: सप्तमे॥1।7।

बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 7

तुला में चंद्रमा रहने पर देवता, ब्राह्मणों व साधु सज्जनों का सत्कार करने वाला, बुद्धिमान, पवि आचरण करने वाला अर्थात् दूसरों की स्त्री व धनादि का अलोलुप, सत्याचारणशील, स्त्री द्वारा वश मे किया गया, ऊंचे कद वाला, ऊंची नामक वाला, कमजोर एवं अस्वस्थप्राय शरीर वाला, यात्रा प्रेमी, धनी, अंगहीन, क्रय-विक्रय में कुशल, देवता वाचक किसी द्वितीय नाम वाला अर्थात् सामान्यत: दो नामों वाला, रोगी, अपने बंधु-बान्धवों का उपकार करने वाला किन्तु अपने ही बन्धुओं से तिरस्कृत व त्यक्त होता है।

तुलाविलग्ने तु नर: प्रसूत: स्वकर्मणा जीवति बुद्धिमांश्च।
विद्वत्प्रिय: सर्वकलास्वभिज्ञश्चलस्वभावो वनिताजितश्च॥7॥

वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो. 7/पृ. 288

यदि जन्म समय में तुलालग्न विद्यमान हो तो मनुष्य बुद्धिमान, अपने कार्य में

संलग्न रहने वाला या पैतृक कार्य से जीविका कमाने वाला, विद्वानों का प्यारा, साभी कलाओं का जानकार, चंचल स्वभाव वाला, स्त्री से पराजित होने वाला होता है।

ललितवदननेत्रो राजपूज्यश्च विद्वान् मदनरतिविलोल: स्त्रीधनक्षत्रशाली।
विरलदशनमुख्य: शान्तबुद्धिर्विषादी चलमतिरतिभीरुर्जायते तौलिलग्ने।7।

–जातक पारिजात श्लो. 7/पृ. 678

सुन्दर चेहरा (मुखाकृति) और नेत्र, राजपूज्य (राजा से सम्मानित), विद्वान, स्त्रियों से रति के लिये जिसका चित्त चंचल रहे। स्त्री, धन और क्षेत्र (खेत, भूमि) से युक्त, विरल (परस्पर भिड़े हुए नहीं) दांत, मुख्य (प्रधान), शान्त बुद्धि, विषादी (किसी एक विचार पर दृढ़ न रहना अस्थिर मति का लक्षण है), अत्यन्त भीरु (डरपोक) हो।

कन्दर्परूपनिकपुणस्तुलादिभागेऽध्वसेवज्ञ:।
श्यामकला पण्यरतो नियोगधीर: समेधावी ॥10॥

–सारावली पृ. 466/श्लो. 10

यदि जन्म लग्न में तुला राशि व तुला राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक कामदेव के तुल्य स्वरूपवान, चतुर मार्ग सेवन की विधि का ज्ञाता, कृष्ण वर्ण, व्यापार में लीन, वियोग में धैर्यवान् और सुन्दर मेधावी होता है।

तुलालग्नोदये जात: सुधी: सत्कर्म जीविक:।
विद्वान सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजित:॥

–मानसागरी

तुलालग्न वाला जीव ज्ञानशील, विवेकी, सतकार्य युक्त, मान-सम्मान वाला, धनसम्पदाशील, अनेक कलाओं द्वारा जीवनयापन करने वाला, जनसमाज में पूज्य, वाणिज्य कार्य में कुशल रहे।

भोज संहिता

तुला राशि का स्वामी शुक्र है। शुक्र ऐश्वर्यशाली व विलास पूर्ण ग्रह है। गौर वर्ण, मध्यम कद तथा सुन्दर, आकर्षक चेहरा इस राशि वाले जातक के प्रारम्भिक लक्षण हैं।

यह राशि चर संज्ञक, वायु तत्त्व प्रधान व पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव वृष-तुल्य होते हुए भी विशेषत: इस राशि वाले जातक विचारशील, ज्ञानप्रिय, कुशल कार्य सम्पादक व राजनीतिज्ञ होते हैं।

इस राशि का चिह्न तुला (तराजू) है। तराजू दो वस्तुओं के संतुलन का परीक्षण करते हुए हल्की व भारी वस्तु का बोध कराती है। अतः इस राशि वाले व्यक्ति की संतुलन शक्ति बड़ी गजब की होती है। यदि आपका जन्म चित्रा नक्षत्र में है तो आप किसी भी व्यक्ति के मन की थाह पा लेते हैं। कोई व्यक्ति क्या कहना चाहता है ये बोलने से पहले ही उसके हृदय की बात समझ लेते हैं। अपनी इसी फुर्तीली निर्णयात्मक शक्ति के कारण आप शीघ्र ही लोगों पर छा जाते हैं। ''तराजू'' जैसे व्यापार का परिचायक है इस राशि वाले बड़े कुशल व्यापारी होते हैं तथा लोक व्यवहार में चतुर होने के कारण इनको व्यापारिक सफलता शीघ्र मिल जाती है।

तुला राशि पुरुष जाति सूचक व क्रूर स्वभाव राशि मानी जाती है। यदि आपका जन्म स्वाति नक्षत्र में है तो आपमें एक जबरदस्त व्यापारी के समस्त गुण विद्यमान हैं। आप सच्चा व खरा परीक्षण करने की क्षमता रखते है। आप सहज में ही किसी व्यक्ति के छलावे में नहीं आ सकते। आप राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। जन्मकुण्डली में यदि शुक्र की स्थिति अच्छी है तो कुशल अभिनेता भी बन सकते हैं।

नक्षत्र चरणानुसार फलादेश

रा-री	रू-रे-रो-ता	ती-तू-ते
चित्रा	स्वाति	विशाखा

चित्रार्द्धम् स्वाति विशाखा पादत्रयं तुला।

तुला नक्षत्र में चित्रा–मंगल+स्वाति–राहु+विशाखा–गुरु इन ग्रहों का समावेश है। तब ही तुला के सौन्दर्य का आकार विकसित होगा यह हमारा स्पष्ट ध्यातव्य है।

चित्रा नक्षत्र

चित्रासु चित्रांवरमाल्यधारी सुलोचनांगः पुरुष जातः।

चरण	नक्षत्रांश	राशि	नक्षत्र स्वामी	उ. नक्ष. स्वामी	अंश
तृतीय	0.00 से 3.20 शु.	शुक्र शुक्र शुक्र	मंगल मंगल मंगल	बुध केतु शुक्र	0.0.0 से 1.53.20 1.43.20 से 2.40.0 2.40.0 से 4.53.20
चतुर्थ	3.20 से 6.40 मं	शुक्र शुक्र	मंगल मंगल	सूर्य चंद्र	4.53.20. से 4.33.2 4.33.20 से 6.40.0

चंद्रमा जब चित्रा नक्षत्र में हो—चंद्रमा जब चित्रा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक कई प्रकार के वस्त्र और मालाएं धारण करता है। उसकी आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। मंगल का नक्षत्र होने से चित्रा के लिए मित्र है और शुभप्रद है।

चित्रा नक्षत्र तृतीय चरण में हो—चित्रा नक्षत्र तृतीय चरण में यदि चंद्र हो तो जातक परदारगामी होता है। यह पाद शुक्र का नक्षत्र है, स्वामी मंगल और शुक्र दोनों कामुक हैं। अत: परदारगामी होना उपयुक्त है।

चित्रा नक्षत्र चतुर्थ चरण में हो—चित्रा नक्षत्र चतुर्थ चरण में यदि चंद्र जन्म समय में हो तो जातक पीड़ित रहता है अर्थात् कोई चोट खाता रहता है। इस पाद का स्वामी मंगल है। इस नक्षत्र का स्वामी भी मंगल है। अत: मंगल का चंद्र पर बहुत प्रभाव रहेगा जिसके फलस्वरूप शरीर (चंद्र) पर चोट आदि का बहुधा लगना व्यक्त होगा।

आपके जन्म समय में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला राशि में उत्पन्न जातक सुन्दर एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। उनकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वाभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित, प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यो से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अत: राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अत: इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक संबंध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धान्त या ग्रंथ की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमत्ता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृत्ति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यन्त ही दक्ष होंगे।

चंद्रमा स्वाति नक्षत्र में

दाता कृपालु प्रियवाक् धनी च धर्माश्रितः शीतकरेऽनिलर्क्षे।

चरण	नक्षत्रांश	राशि	नक्षत्र स्वामी	उ. नक्ष. स्वामी	अंश
प्रथम	6.40 से 10.0 गु.	शुक्र शुक्र	राहु राहु	राहु गुरु	6.40.0 से 8.40.0 8.40 से 10.26.40
द्वितीय	10.0 से 13.20 श.	शुक्र शुक्र	राहु राहु	शनि बुध	10.26.040 से 12.33.20 12.33.20 से 14.26.40
तृतीय	13.20 से 16.40 श.	शुक्र शुक्र	राहु राहु	केतु शुक्र	14.26.40 से 15.13.20 15.13.20 से 17.26.40
चतुर्थ	16.40 से 20.00 गु.	शुक्र शुक्र शुक्र	राहु राहु राहु	सूर्य चंद्र मंगल	17.26.40 से 18.6.40 18.5.40 से 19.13.20 19.13.20 से 20.00

चंद्रमा यदि स्वाति नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति दाता, कृपालु, मीठा बोलने वाला, धनी तथा धार्मिक होता है। यह उल्लेख उस फल से मिलता है जो कि जातक पारिजात ने इस सन्दर्भ में दिया है, हम इस फल से अधिक सहमत नहीं हैं। हमारी टिप्पणी जातक पारिजात से उद्धृत विवरण में देखिए।

स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण में चंद्रमा–स्वाति नक्षत्र प्रथम चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति चोर होता है। यहां नक्षत्र स्वामी राहु और पाद स्वामी गुरु है। राहु गुरु को बिगाड़ देगा और अपना फल देकर चोर बना देगा।

स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण में चंद्रमा–स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है। इस पाद का स्वामी भी

शनि है। इस नक्षत्र का स्वामी राहु है, राहु और शनि दोनों चंद्र के शत्रु हैं। चंद्र लग्न रूप होने से आयु का प्रतिनिधि है। अत: दो पापी प्रभावों में आकर आयु को अल्प करता है।

स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण में चंद्रमा–स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर जातक धार्मिक होता है। इस पाद का स्वामी भी शनि है। नक्षत्र का स्वामी राहु है। राहु और शनि चंद्र पर प्रभाव डालकर धार्मिक कैसे बना सकते हैं यह विचारणीय विषय है। हां, वैराग्यवान अवश्य बना सकते हैं, क्योंकि चंद्र का मन है और शनि और राहु दोनों वैराग्य के प्रतिनिधि हैं।

स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में चंद्रमा–स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर जातक राजा होता है। इस चरण का स्वामी गुरु है। नक्षत्र यद्यपि राहु का है, परन्तु ऐसा लगता है कि राहु यहां गुरु के प्रभाव में आ गया है और चंद्र और गुरु मिलकर राजयोग का फल कर रहे हैं। परन्तु यह विचारणीय है कि कहीं राहु गुरु को बिगाड़ कर उल्टा फल तो न करेगा।

आपमें सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उसमें सफलता की प्रतीक्षा करने मे समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय-समय पर धनार्जन होता रहेगा। आपमें शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलत: परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर-दूर तक व्याप्त रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को विनयपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

चंद्रमा विशाखा नक्षत्र में

ईर्ष्युर्नरः कान्तियुतोऽतिलुब्धो द्विदैवते वाक्चतुरः कुलेप्सु।

चंद्रमा जब जन्म कुण्डली में विशाखा नक्षत्र में हो मनुष्य ईर्ष्या करने वाला, सुन्दर कान्ति वाला होता है। यह फलादेश भी जातक पारिजात में दिए फलादेश से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। इस सन्दर्भ में हमारी टिप्पणी वहां देखिए।

विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में यदि जन्म समय में चंद्रमा स्थित हो तो जातक नीति को जानने वाला होता है। यह पाद मंगल ग्रह का है और नक्षत्र है गुरु का।

चरण	नक्षत्रांश	राशि	नक्षत्र स्वामी	उ. नक्ष. स्वामी	अंश
प्रथम	20.0 से 23.20 मं.	शुक्र शुक्र	गुरु गुरु	गुरु शनि	20.0.0 से 21.46.40 21.46.40 से 23.53.20
द्वितीय	23.20 से 26.40 शु..	शुक्र शुक्र	गुरु गुरु	बुध केतु	23.53.20 से 25.46.50 25.46.40 से 26.33.20
तृतीय	26.40 से 30.0 बु.	शुक्र शुक्र	गुरु	शुक्र सूर्य चंद्र	26.33.20 से 28.46.40 28.46.40 से 29.26.40 29.26.40 से 30.0.0

अत: चंद्र पर गुरु और मंगल राजकीय तथा तर्कशील ग्रहों का प्रभाव पड़ेगा जिसके फलस्वरूप मनुष्य नीति में निपुण होगा।

विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म के समय चंद्र स्थित हो तो जातक शास्त्रवेत्ता अर्थात् शास्त्रों को जानने वाला होता है। इस पाद का स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र का स्वामी गुरु है। दोनों आचार्य हैं, विद्वान हैं, इसलिए शास्त्रवेत्ता कहा। दोनों का प्रभाव लग्नरूप चंद्र पर पड़ेगा ही।

यदि आपका जन्म ''विशाखा'' नक्षत्र में हुआ है तो शारीरिक श्रम न तो आपके वश की बात है और न ही उससे आपका भाग्योदय हो सकता है। इसके विपरीत मानसिक श्रम से आप लाभ उठा सकते हैं। आप वाक पटु हैं। सेल्समैन शिप आपके लिए सर्वथा लाभप्रद है। ब्लैक मार्केटिंग से भी आपका संबंध हो सकता है। सेक्स के मामले में आप बहुत ही रंगीले व्यक्ति हैं। लड़कियां सहज ही आपकी ओर आकर्षित हो जाती हैं, और इस बात का आपने हमेशा फायदा उठाया है।

यदि आपका जन्म 17 अक्टूबर से 13 नवम्बर के बीच में हुआ है तो आपका आत्मबल कमजोर है। इन दिनों सूर्य तुला राशि पर भ्रमण करता है। पराशर के मतानुसार ''तुला का सूर्य'' 1000 राजयोग नष्ट करता है। ऐसे व्यक्तियों की दिमागी उपज बहुत तेज होती है तथा कला, विज्ञान व मशीनरी कार्य में रुचि रखते हैं। जीवन के 24 वर्ष के पश्चात् इनका भाग्योदय होता है। बाल्यपन में जीवन निरुद्देश्य व लापरवाही से ही बीतेगा तथा माता-पिता से भी कुछ मनमुटाव रहेगा। विशेषकर पिता के साथ।

तुला राशि वाले व्यक्ति को विवाह से धन प्राप्ति के अवसर बनते हैं तथा विवाहोपरान्त इनके जीवन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जा सकते हैं। समुद्री यात्रा

आपके लिए कोई विशष लाभप्रद नहीं है।

शुक्र एक विलासी, शीतल व सौम्य ग्रह है। यह रात्रि को हल्की श्वेत झलकदार किरणें बिखेरता है। अत: श्वेत रंग व साफ सुथरी व ऐश्वर्य प्रधान वस्तुओं का व्यापार आपके अनुकूल कहा जा सकता है। आपका सदा सर्वदा अनुकूल रत्न ''हीरा'' है।

तुलालग्न स्त्री जातक

इस लग्न में जन्मी कन्या वैसे तो काफी सुंदर होती है परन्तु गर्दन कुछ छोटी होना स्वाभाविक है। वह चंचल स्वभाव की होगी, माता-पिता आदि गुरुजनों की भक्त होगी। उपकार को मानने वाली धर्मशीला। वर्ष पर्यन्त तीर्थयात्रा करने वाली दर्शनीय स्थानों को देखने की इच्छुक और कुल के अनुसार अच्छे धन वाली होती है। बचपन से ही यह प्रिय वचन बोलने में कुशल होती है। उसके मस्तक पर प्राय: तिल होता है। शरीर में कभी-कभी दर्द बना रहता है। इसके लिए हर शनिवार शुभ होता है। साथी कम व शत्रु अधिक होते हैं। प्रकृति पित्त की होती है। संतान अधिक होती है। वर्ष 2 में अग्नि, 8वें जल भय रहता है। वर्ष 15, 18, 22 में कष्ट होते हैं। उम्र लम्बी होती है। 70 से ऊपर जा सकती है। जातक की मृत्यु किसी प्रियजन के वियोग का आघात लगने से या ज्यादा उपवास व्रतों से कफ द्वारा होती है।

तुलालग्न के शुभाशुभ फल

- ❑ लग्नेश शुक्र फल। शुक्र अष्टमेश है इसका दोष भी है। अत: कुछ पापी है अत: यह सम फल प्रदान करेगा।
- ❑ धनेश, सप्तमेश मंगल मारक भी है। साथ में गुरु योग हो तो ज्यादा मारक होगा।
- ❑ तृतीयेश षष्ठेश गुरु पाप फल करता है, मारक भी बन जाता है।
- ❑ चतुर्थेश, पंचमेश शनि शुभ फलकर्ता है। तुलालग्न में शनि योगकारक होता है। वृषलग्न से भी ज्यादा शुभ होता है। यह शनि जहां बैठेगा वहां उस भाव के फल में वृद्धि करेगा।
- ❑ भाग्येश द्वादशेश बुध है, शुभ फल देता है।
- ❑ दशमेश चंद्र पाप फलदाता है। यदि बलवान तिथि का हो तो मध्य का फल और चंद्र+बुध योग बना हो तो शुभ फल देगा। चंद्रमा को केन्द्राधिपति दोष है।

- एकादशेश सूर्य पापी है। चर लग्न होने से यह सूर्य बाधक भी है।
- इस लग्न में चंद्र+बुध ही राजयोगकर्त्ता है। सफलयोग युति–1. शुक्र+शनि, 2. शनि अकेला, 3. बुध+शनि, 4. शनि+चंद्र, 5. चंद्र+बुध, 6. बुध+शुक्र, 7. मंगल+शनि।

रोग

- यह कालपुरुष का सातवां स्थान है। अत: गुप्तेन्द्रिय है। अत: तुला राशि शुक्र एवं सप्तम भाव या सप्तमेश पाप प्रभाव में हो तो गुप्तेन्द्रियों के रोग होंगे।
- लग्न में मंगल और सातवें गुरु हो तो उच्च रक्तचाप रहेगा।

राजयोग

- लग्न में शनि शश योग देगा।
- लग्न में शुक्र मालव्य योग करेगा।
- चौथे शनि शश योग करेगा।
- सातवें मंगल रूचक योग करेगा।
- शनि लग्न में दसवें चंद्र में हो तो राजयोग होगा।
- दसवें चंद्र+शनि योग हो तो उत्तम राजयोग बनेगा।
- चं+बु की युति भी राजयोग करेगी।

विलम्ब विवाह योग

कर्क या सिंह का शुक्र विलम्ब से विवाह करायेगा। एक बार निश्चित शादी छुड़वा कर फिर विवाह होगा।

स्वरूप

- लम्बा कद या औसत लम्बा कद होगा।
- चेहरा थोड़ा-सा लम्बाई लिए, नाक-नक्श सुंदर।
- गौण वर्ण होगी। नजाकत वाली हो, चंद्र लग्न में सुंदर, शुक्र लग्न में या तो स्वयं गौर हो पति गेहुंआ हो या स्वयं गेहुंए रंग वाली हो तो पति गौर वर्ण मिलेगा।
- मोटी नासिका, लम्बी आकृति, सुंदर नेत्र।

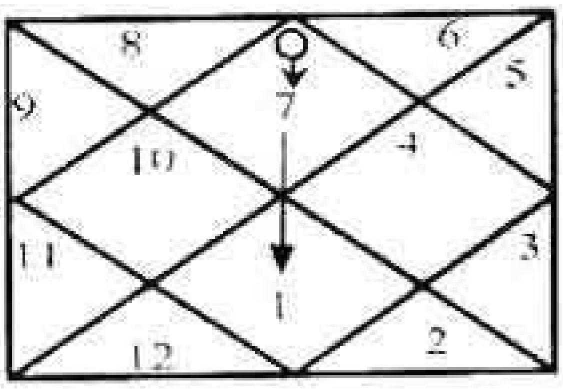
- चेहरे पर लावण्यतामय आकर्षकता रहेगी।
- दांत सुंदर सफेद चमक वाले।
- सीना चौड़ा होगा। रूप में यौवनमद रहेगा, स्तन कुछ कठोर पर अति सुंदर होंगे।
- कफ प्रधान प्रकृति होगी। चंचल हो, स्वभाव लचीला होगा।

विशेषताएं

- विलासी शौकीन हो। व्यसनप्रिय हो। ऐश्वर्य पूर्ण हो। सेक्स के मामले में अत्यधिक रंगीली होगी।
- स्वयं को आकर्षक व दूसरों को भी आकर्षित करने का प्रयत्न हो। घूमने की शौकीन होगी।
- अपना मतलब सिद्ध करने व दूसरों से धन ग्रहण की प्रवृत्ति होगी।
- अपना स्वार्थ साधते वक्त दूसरों के हितों की परवाह न करें। 10 रु. खर्च करें तो 100 रुपये वसूलने की प्रवृत्ति हो।
- गप्प मारने व झूठ बोलने में रुचि ज्यादा होगी। मीठा बोलकर काम निकाले।
- देव, ब्राह्मण, गुरु भक्त हो व इंसाफ पसंद हो, धार्मिक होगी।
- मस्तिष्क क्रियाशील, बुद्धि संतुलित, ज्ञानप्रिय, कुशाग्र बुद्धि दक्ष राजनीतिज्ञ व सम्पादिका भी हो सकती है।
- खरीद फरोख्त में अति होशियार, कुशल व्यापारी व व्यवसायिक सफलता शीघ्र प्राप्त करेगी।
- भाग्योदय देर से होगा। संतान भी सीमित होगी।
- कला कौशल, विज्ञान व मशीनरी के कामों में रुचि होगी।
- नौकरी करे तो सेक्रेटरी, न्यायाधीश, निर्देशक हो व पुस्तक लेखिका, काव्यप्रेमी, साहित्य प्रेमी हो। स्मगलर, अभिनेत्री, पंच, सरपंच, प्रधानमंत्री आदि उत्तम पद पाती है।
- शुक्र बलवान हो व बुध गुरु से प्रभावित हो तो सत्यप्रिय तथा धार्मिक एवं दीर्घायु होवें। शुक्र ज्यादा पाप प्रभावी हो तो अल्पायु।

तुलालग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–तुलालग्न की कुण्डली में सूर्य जो लग्नेश शुक्र का शुत्र है, एकादश (लाभ) भाव का स्वामी है। इस लग्न के जातक के माणिक्य केवल सूर्य



की महादशा में धारण करना आर्थिक लाभ के लिये शुभ फलदायक होगा।

2. मोती–कन्या लग्न में चंद्र दशम भाव का स्वामी होता है। यद्यपि चंद्र और लग्नेश मित्र नहीं है। परन्तु तुलालग्न वाले को मोती धारण करने से राज्य-कृपा, यश, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। नौकरी या व्यवसाय में उन्नति होती है। महादशा में मोती धारण बड़ा लाभदायक होता है।

3. मूंगा–तुलालग्न में मंगल द्वितीय भाव में स्वराशि में हो तो मंगल की महादशा में यदि उनकी मृत्यु का समय निकट न आ गया हो तो मूंगा धारण करके धन-लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

4. पन्ना–तुलालग्न के लिए नवम और द्वादश भावों का स्वामी होता है। द्वादश में उसकी मूल त्रिकोण राशि पड़ती है। परन्तु जब भी नवम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण बुध इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है। इसके जातक के पन्ने को हीरे के साथ धारण करना चाहिए।

5. पुखराज–तुलालग्न के लिए बृहस्पति व षष्ठ का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह माना गया है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और बृहस्पति परस्पर मित्र हैं। अत: वृश्चिक लग्न के जातकों को पीला पुखराज तथा तुलालग्न के जातक को यह धारण नहीं करना चाहिए।

6. हीरा–तुलालग्न के लिए शुक्र लग्न का स्वामी है। अत: इस लग्न के जातक को हीरा धारण करने से स्वास्थ्य लाभ, आयु में वृद्धि, यश, मान तथा भाव शुक्र की महादशा में धारण करने में अति लाभकारी होगा। आपका जीवन रत्न हीरा है। शुक्र अष्टमेश है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता।

7. नीलम–तुलालग्न के लिए चतुर्थ और पंचम का स्वामी होने के कारण अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह माना गया है। यह लग्नेश शुक्र का अभिन्न मित्र है। अत: इस लग्न का जातक इस रत्न को धारण करके सब प्रकार सुख प्राप्त कर सकता है। शनि की महादशा में यह विशेष रूप से फलदायी होता है। लग्नेश शुक्र का रत्न हीरा या नवम् भाव के स्थाई बुध का रत्न पन्ना है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **सन्तान हेतु**–नीलम सवा पांच रत्ती, जिरकॉन सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–पन्ना सवा चार रत्ती, हीरा सवा चार रत्ती।

3. आरोग्य हेतु–सवा आठ रत्ती जिरकॉन चांदी में शुक्र यंत्र के साथ।

4. स्थाई लक्ष्मी हेतु–मूंगा सवा चार रत्ती, हीरा (जिरकॉन) सवा चार रत्ती, पन्ना सवा चार रत्ती बीसा यंत्र में धारण कर लॉकेट गले में पहने। अथवा नीलम सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा पांच रत्ती भी त्रिधातु में पहन सकते हैं।

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युंजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृत्तिका	अ	मेष	मंगल	मेंढा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृत्तिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मेंढा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वु	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि. 1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मीं. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मींढा	गुरु	16
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मेंढा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	व्याघ्र	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यु	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सि. 3 बि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 2 सर्प	गुरु	16
26.	पूर्वा भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
1	अश्विनी	अश्विन	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	सम	मित्र	मित्र
3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व	शत्रु	सम	सम	सम
8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व	मित्र	मित्र
9.	आश्लेषा	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व	सम	मित्र	सम	सम	सम
10.	मघा	पितारस	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	सम	मित्र	मित्र
12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
14.	चित्रा	त्वसत्व	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	सम	सम	सम
17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व.	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.
20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	सम	मित्र	मित्र
21.	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
23.	धनिष्ठा	अष्टवसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
25.	पूर्वा भा.	अनेकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	सम	सम	सम
26.	उ. भा.	अहिर बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
27.	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व.	सम	मित्र	सम	सम	सम

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि

1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि

3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. **मृगशिरा** (मंगल)				6. **आर्द्रा** (राहु)				7. **पुनर्वसु** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ड़	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

कर्क राशि

7. **पुनर्वसु** (गुरु)				8. **पुष्य** (शनि)				9. **आश्लेषा** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. **मघा** (केतु)				11. **पूर्वाफाल्गुनी** (शुक्र)				12. **उत्तरफाल्गुनी** (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

कन्या राशि

12. **उत्तराफाल्गुनी** (सूर्य)				13. **हस्त** (चंद्र)				14. **चित्रा** (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

तुला राशि

14. **चित्रा** (मंगल)				15. **स्वाति** (राहु)				16. **विशाखा** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. **विशाखा** (गुरु)				17. **अनुराधा** (शनि)				18. **ज्येष्ठा** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रावण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. **धनिष्ठा** (मंगल)				24. **शतभिषा** (राहु)				26. **पूर्वाभाद्रपद** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	तू	10/19/0/04	4	गु.	–	–	–	–

मीन राशि

26. **पूर्वाभाद्रपद** (गुरु)				27. **उत्तराभाद्रपद** (शनि)				28. **रेवती** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

तुलालग्न पर अंशात्मक फलादेश

तुलालग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/30/0 से 6/13/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–रा
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'परदारगामी'

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं एंसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्न नक्षत्र का स्वामी मंगल, लग्नेश एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र दोनों ग्रह कामुक हैं। फलत: जातक कामी होगी एवं पराई स्त्रियों में अत्यधिक रुचि रखेगा।

लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था में है। अत्यन्त कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। लग्नेश शुक्र एवं मंगल की दशा बैठकर जायेगी।

तुलालग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/3/20 से 6/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–रा
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'परदारगामी'

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता हैं। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्न नक्षत्र का स्वामी मंगल, लग्नेश एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र दोनों ग्रह कामुक हैं। फलत: जातक कामी होगा एवं पराई स्त्रियों में अत्यधिक रुचि रखेगा।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से उदित अंशों का है। बलवान है। जातक लग्नबली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश शुक्र एवं धनेश मंगल की दशा बेकार जायेगी।

तुलालग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/3/20 से 6/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (चर)
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–रा
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–परदारगामी

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्न नक्षत्र का स्वामी मंगल, लग्नेश एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र दोनों ग्रह कामुक हैं। फलतः जातक कामी होगा एवं पराई स्त्रियों में अत्यधिक रुचि रखेगा।

लग्न दो से तीन अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। शुक्र की दशा अच्छा फल देगी परन्तु धनेश मंगल की दशा नेष्ट फल देगी क्योंकि उसकी लग्नेश से शत्रुता है।

तुलालग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा 2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–6/6/40 से 6/10/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र 5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–व्याघ्र 7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा

10. **वर्णाक्षर**–री 11. **वर्ग**–हरिण

12. **लग्न स्वामी**–शुक्र 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पीड़ित'

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मंगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देगा।

लग्न तीन से चार अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' वाला है, बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल और नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा भी उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–6/6/40 से 6/10/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–री
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्वगृह
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–पीड़ित

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मंगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देगा।

लग्न चार से पांच अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' वाला है, बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र, चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा भी उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–6/6/40 से 6/10/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–री
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शुत्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्वगृह
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–पीड़ित

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मंगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देगा।

लग्न पांच से छः अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' वाला है। बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–6/6/40 से 6/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–री
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शुत्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–पीड़ित

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मंगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देता है।

लग्न छः से सात अंशों के भीतर 'उदित अंशों' में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा भी उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–6/10/0 से 6/13/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्कर

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। यहां नक्षत्र स्वामी राहु राक्षसों का सेनापति है। राहु गुरु की सद्‌बुद्धि को बिगाड़ देता है। फलत: जातक की मनोवृत्ति चौर्य कार्य की ओर प्रेरित होती है। जातक तस्करी में रुचि रखता है।

लग्न सात से आठ अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु दोनों परस्पर शत्रु होने से राहु व गुरु की दशा प्रतिकूल (खराब) फल देगी।

तुलालग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–6/10/0 से 6/13/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्कर

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु

राक्षसों का सेनापति है। राहु, गुरु की सद्बुद्धि को बिगाड़ देता है। फलतः जातक की मनोवृत्ति चौर्य कार्य की ओर प्रेरित होती है। जातक तस्करी में रुचि रखता है।

तुलालग्न आठ से नौ अंशों के भीतर, उदित अंशों में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु दोनों में परस्पर शत्रुता होने से राहु एवं गुरु दोनों की दशाएं प्रतिकूल (खराब) फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–6/10/0 से 6/13/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्कर

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु राक्षसों का सेनापति है। राहु, गुरु की सद्बुद्धि को बिगाड़ देता है। फलतः जातक की मनोवृत्ति चौर्य कार्य की ओर प्रेरित होती है। जातक तस्करी में रुचि रखता है।

तुलालग्न नौ से दस अंशों के भीतर, उदित अंशों में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु, दोनों में परस्पर शत्रुता होने से राहु एवं गुरु दोनों की दशाएं प्रतिकूल (खराब) फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–6/13/20 से 6/16/40 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रे
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायुषी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। लग्न राहु व शनि दो पापग्रहों के प्रभाव में आने से जातक को अल्पायु वाला घोषित करता है।

तुलालग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर 'आरोह अवस्था' में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छी जायेगी। नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि परस्पर मित्र हैं। फिर भी इन दोनों की दशाएं स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य हैं।

तुलालग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–6/13/20 से 6/16/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रे
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायुषी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है।

स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। लग्न राहु व शनि दो पापग्रहों के प्रभाव में होने से जातक को अल्पायु वाला घोषित करता है।

तुलालग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छी जायेगी। नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि परस्पर मित्र हैं, फिर भी इन दोनों की दशाएं स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य हैं।

तुलालग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–6/13/20 से 6/16/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रे
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायुषी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। लग्न राहु व शनि दो पापग्रहों के प्रभाव में होने से जातक को अल्पायु वाला घोषित करता है।

तुलालग्न बारह से तेरह के अंशों के भीतर होने से 'आरोह अवस्था' में है, बलवान है। फलत: शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि परस्पर मित्र हैं फिर भी राहु एवं शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/16/40 से 6/20/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–धर्मी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। यहां शनि व राहु के प्रभाव के से जातक में वैराग्य भाव जल्दी आयेगा। फलतः जातक धार्मिक होगा।

तुलालग्न तेरह से चौदह अंशों के भीतर होने से 'आरोह अवस्था' में है। बलवान है। फलतः लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि दोनों परस्पर मित्र हैं। फिर भी राहु एवं शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/16/40 से 6/20/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–धर्मी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है।

स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। यहां शनि व राहु के प्रभाव से जातक में वैराग्य भाव जल्दी आयेगा। फलत: जातक धार्मिक होगा।

तुलालग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से 'आरोह अवस्था' में है, पूर्ण बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि में परस्पर मित्रता है। फिर भी राहु व शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए ध्यान रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/16/40 से 6/20/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–धर्मी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। यहां शनि व राहु के प्रभाव से जातक में वैराग्य भाव जल्दी आयेगा। फलत: जातक धार्मिक होगा।

तुलालग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है, पूर्ण बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि में परस्पर मित्रता है। फिर भी राहु व शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए ध्यान रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–6/20/0 से 6/20/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–ता
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति न त्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' है। बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता है अत: राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–6/20/0 से 6/20/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–ता
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है।

स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' है। बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता है अत: राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–स्वाति
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–6/20/0 से 6/20/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–वायु
10. वर्णाक्षर–ता
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' है। बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता है अत: राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–स्वाति
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–6/20/0 से 6/20/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–ता
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न उन्नीस से बीस अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता होने से राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–6/20/0 से 6/23/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ती
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–नीतिज्ञ

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के

प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्न पर गुरु, मंगल एवं शुक्र के प्रभाव से जातक तर्कशील एव नीतिशास्त्र में निपुण होता है।

तुलालग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर मध्यबली होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अति उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में परस्पर शत्रुता होने से गुरु एवं धनेश मंगल दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–6/20/0 से 6/23/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ती
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–नीतिज्ञ

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्न पर गुरु, मंगल एवं शुक्र के प्रभाव से जातक तर्कशील एव नीतिशास्त्र में निपुण होता है।

तुलालग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर 'अवरोह अवस्था' में होने से थोड़ा उतार में है। फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा शुभ फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में परस्पर शत्रुता होने से धनेश मंगल एवं पराक्रमेश गुरु दोनों ही दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–6/20/0 से 6/23/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)

6. **योनि**–व्याघ्र

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि

10. **वर्णाक्षर**–ती

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–शुक्र

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–नीतिज्ञ

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्न पर गुरु, मंगल एवं शुक्र के प्रभाव से जातक तर्कशील एव नीतिशास्त्र में निपुण होता है।

तुलालग्न बाईस से तेईस अंशों के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' में है। फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में परस्पर शत्रुता है। अत: धनेश मंगल एवं पराक्रमेश गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा

2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–6/23/20 से 6/26/40 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–व्याघ्र

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि

10. **वर्णाक्षर**–तू

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–शुक्र

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–शास्त्रवेत्ता

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र

के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। गुरु व शुक्र के प्रभाव से जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता, दार्शनिक व शास्त्रवेत्ता होता है।

तुलालग्न तेईस से चौबीस अंशों के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' में है फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र में परस्पर शत्रुता है। अत: तृतीयेश गुरु की दशा नेष्ट फल देगी। गुरु में शुक्र या शुक्र में गुरु का अन्तर भी नेष्ट फल देगा।

तुलालग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–6/23/20 से 6/26/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–शास्त्रवेत्ता

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। गुरु व शुक्र के प्रभाव से जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता, दार्शनिक व शास्त्रवेत्ता होता है।

तुलालग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' में है फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र में परस्पर शत्रुता है। अत: तृतीयेश गुरु की दशा नेष्ट फल देगी। गुरु में शुक्र या शुक्र में गुरु का अन्तर भी नेष्ट फल देगा।

तुलालग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–6/23/20 से 6/26/40 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–शास्त्रवेत्ता

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। गुरु व शुक्र के प्रभाव से जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता, दार्शनिक व शास्त्रवेत्ता होता है।

तुलालग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' में है, फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र में परस्पर शत्रुता है। अत: तृतीयेश गुरु की दशा नेष्ट फल देगी। गुरु में शुक्र या शुक्र में गुरु का अन्त भी नेष्ट फल देगा।

तुलालग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/26/40 से 6/30/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ते
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र

के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। गुरु ज्ञान का एवं बुध तर्क का प्रतीक है। ऐसे जातक में वाद-विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के मध्य होने से 'अवरोह अवस्था' का है। फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। अत: तृतीयेश गुरु एवं व्ययेश बुध दोनों की दशाएं जातक के लिए नेष्ट (अशुभ) साबित होंगी।

तुलालग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/26/40 से 6/30/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य–**द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ते
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। गुरु ज्ञान का एवं बुध तर्क का प्रतीक है। ऐसे जातक में वाद-विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न सत्ताईस से अठ्ठाईस अंशों में होने से 'अवरोह अवस्था' में हीन बली है। यहां लग्नेश शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता होने से तृतीयेश गुरु एवं व्ययेश बुध दोनों की दशा नेष्ट फल देगी।

तुलालग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/26/40 से 6/30/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ते
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। गुरु ज्ञान का एवं बुध तर्क का प्रतीक है। ऐसे जातक में वाद-विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न अठ्ठाईस से उन्तीस अंशों में होने से 'अवरोह अवस्था' में हीन बली है। यहां लग्नेश शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता होने से तृतीयेश गुरु एवं व्ययेश बुध दोनों की दशा नेष्ट फल देगी।

तुलालग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/26/40 से 6/30/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ते
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र

के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। गुरु ज्ञान का एवं बुध तर्क का प्रतीक है। ऐसे जातक में वाद-विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न उन्नतीस से तीस अंशों के मध्य होने से लग्न 'मृतावस्था' में है तथा निस्तेज है। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता होने से तृतीयेश गुरु एवं व्ययेश बुध दोनों की दशा नेष्ट फल देगी।

❑❑❑

तुलालग्न और आयुष्य योग

1. तुलालग्न वालों के लिए मंगल द्वितीयेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। गुरु षष्टेश होने से अशुभ फलदायक है। सूर्य व शुक्र पापी हैं। मंगल साहचार्य से मारक का कार्य करेगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह शुक्र है।
2. तुलालग्न वालों की मृत्यु कफ जनित रोगों से, मृत्यु प्राय जन्म स्थल एवं घर में होती है।
3. तुलालग्न वालों की औसत आयु 85 वर्ष मानी गई है। जन्म उपरान्त 4, 8 माह और 1, 2, 4, 8, 12, 16, 20, 25, 27, 31, 40, 51, 55, 59, 60, 61, 65, 69, 72 और 76 वर्ष शारीरिक कष्ट या अल्प मृत्यु के कहे गए हैं।
4. तुलालग्न में कन्या का सूर्य द्वादश में हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष जीता है।
5. तुलालग्न में शुक्र हो तो जातक दीर्घ देह वाला एवं उत्तम आयु को भोगने वाला प्राणी होता है।
6. तुलालग्न में बुध, बृहस्पति व शुक्र छठे हो तथा मंगल आठवें या नीच का शनि सातवें हो अन्य ग्रह चंद्रमा के पीछे हो तो व्यक्ति कुबड़ा होता है।
7. तुलालग्न में शनि हो, शुक्र या बृहस्पति केन्द्र में हो, सभी पाप ग्रह तीसरे छठे या ग्यारहवें स्थान में हों तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
8. तुलालग्न में शनि शुक्र के साथ चौथे स्थान मकर राशि में हो तो जातक सौ वर्ष से ऊपर स्वस्थ दीर्घायु को भोगता है।
9. तुलालग्न में शुक्र गुरु एवं अन्य शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
10. तुलालग्न में चंद्रमा छठे मीन का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तो तथा सभी शुभगह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
11. तुलालग्न में शुक्र लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

12. तुलालग्न में मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु प्राप्त करता है।
13. तुलालग्न में उच्च का बृहस्पति केन्द्र में हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शुक्र बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु भोगता है।
14. तुलालग्न में मंगल पांचवें कुम्भ का, शनि मेष का, सूर्य सातवें शनि के साथ हो जातक 70 वर्ष की आयु को प्राप्त करता है।
15. तुलालग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।
16. शनि लग्न में, मकर का चंद्र चौथे, मंगल स्वगृही सातवें, सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. तुलालग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्धान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा षष्टम भाव में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
20. तुलालग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें एवं बृहस्पति छठे पाप ग्रहों के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करता हुआ 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
21. तुलालग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
22. तुलालग्न में बृहस्पति मेष का तथा मंगल मीन का परस्पर घर बदल कर बैठे तो बालारिष्ट योग बनता है ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।
23. तुलालग्न में बुध यदि छठे हो, लग्न व चंद्रमा कमजोर हो तो बालारिष्ट योग बनता है। उपचार न करने पर ऐसा जातक छः वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।
24. तुलालग्न में शनि सप्तम में नीच का एवं द्वादश भाव में गुरु+शुक्र+राहु हो अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त होता है।

25. तुलालग्न में सूर्य चौथे, अष्टम में बृहस्पति, द्वादश में चंद्रमा हो तथा लग्नेश शुक्र कमजोर हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

26. तुलालग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्र की युति शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

27. तुलालग्न के दूसरे स्थान में वृश्चिक का मंगल हो तथा चतुर्थ एवं दशम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

28. तुलालग्न के सप्तम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

29. तुलालग्न में लग्नस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

30. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र एवं मंगल दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

31. तुला(चर)लग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार कर्म से पीड़ित रहता है।

32. तुलालग्न में षष्टेश बृहस्पति सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

33. तुलालग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टमा स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

तुलालग्न और रोग

1. तुलालग्न में षष्टेश गुरु लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. तुलालग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश शनि पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक का हृदय रोग होता है।
3. तुलालग्न में चतुर्थेश शनि यदि अष्टमेश शुक्र के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. तुलालग्न में चतुर्थेश शनि मेष, सिंह या वृश्चिक राशि में हो, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. तुलालग्न में चतुर्थ स्थान में शनि एवं छठे स्थान में सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
6. तुलालग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
7. तुलालग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं पंचम भाव में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. तुलालग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असहय हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. तुलालग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. तुलालग्न में शुक्र+शनि+गुरु की युति एक साथ दु:स्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।
11. तुलालग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
12. तुलालग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पाप ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

13. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तथा लग्न पर एकाधिक पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

14. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र चौथे या द्वादश भाव में मंगल+बुध के साथ हो तो जातक कुष्ट रोग से पीड़ित रहता है।

15. तुलालग्न में चंद्र+शनि+बृहस्पति छठे स्थान में हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

16. तुलालग्न में उच्च का बृहस्पति केंद्र में हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शुक्र बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

17. तुलालग्न में मंगल पांचवें कुंभ का, शनि मेष का, सूर्य सातवें शनि के साथ हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को प्राप्त करता है।

18. तुलालग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।

19. शनि लग्न में मकर का चंद्र चौथे, मंगल स्वगृही सातवें, सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. तुलालग्न में शनि किसी भी अन्य पाप ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति सैद्धांतिक, चरित्रवान एवं विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा षष्टम भाव में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

23. तुलालग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें एवं बृहस्पति छठे पाप ग्रहों के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करता हुआ मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

24. तुलालग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

25. तुलालग्न में बृहस्पति मेष का तथा मंगल मीन का परस्पर घर बदल कर बैठे तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

26. तुलालग्न में बुध यदि छठे हो, लग्न व चंद्रमा कमजोर हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है उपाय न करने पर ऐसा जातक छः वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

27. तुलालग्न में शनि सप्तम में नीच का एवं द्वादश भाव में गुरु+शुक्र+राहु हो अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. तुलालग्न में सूर्य चौथे, अष्टम में बृहस्पति, द्वादश में चंद्रमा हो तथा लग्नेश शुक्र कमजोर हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही 'शीघ्र मृत्यु' को प्राप्त होता है।

29. तुलालग्न में सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्र की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा बालक 'शीघ्र मृत्यु' को प्राप्त होता है।

30. तुलालग्न के दूसरे स्थान में वृश्चिक का मंगल हो तथा चतुर्थ एवं दशम भाव में भी पाप ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

31. तुलालग्न के सप्तम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

32. तुलालग्न में लग्नस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक 'मातृघातक' होता है।

33. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

34. तुला(चर)लग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार कर्म से पीड़ित रहता है।

35. तुलालग्न में षष्टेश बृहस्पति सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

36. तुलालग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

तुलालग्न और विवाहयोग

1. लग्न में शनि तथा चंद्रमा हो, छठे भवन में शुक्र हो, तो जातक राज्य-मान्य, अतिकामी व पत्नी को भोगने वाला होता है।
2. यदि स्त्री की कुण्डली में लग्नेश, सप्तमेश, नवमेश और चंद्र स्थित राशि उन सबके स्वामी शुभ ग्रहों के उत्तम स्थानों में स्थित हों पर अस्त न हो तो स्त्री भाग्यशालिनी, सुन्दरी, बन्धुओं में पूज्य और पुण्य कर्म करने में कुशल होती है।
3. तुलालग्न हो, शुक्र बली हो तो स्त्री संचित धन द्वारा सहायता करे।
4. शुक्र के नवमांश में शनि और शनि के नवमांश में शुक्र हो दोनों में परस्पर दृष्टि हो तो वह स्त्री कामातुर होकर पुरुष की आकृति बनाती हुई, अपनी सहेली आदि स्त्री के साथ मैथुन क्रिया से कामाग्नि को शान्त कराती है।
5. मंगल द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि का हो, शुक्र भी वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक स्त्री आत्महत्या करती है।
6. तुलालग्न में शनि सप्तम भाव में चंद्रमा के साथ से तथा लग्न में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है, अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
7. तुलालग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय स्थान में सूर्य हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. तुलालग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।
9. तुलालग्न में सूर्य, शनि और शुक्र की युति हो, सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।
10. तुलालग्न में शुक्र दशम या लाभ स्थान में हो, शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में सूर्य या चंद्रमा हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।

11. तुलालग्न में द्वितीयेश मंगल वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।
12. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।
13. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल वक्री हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी भी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह मे अवरोध आते हैं और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।
14. तुलालग्न वालों के लिए शनि का द्वितीयस्थ होना और मंगल का अष्टमस्थ होना अनिष्टकारक है। ऐसे जातक का विवाह नहीं होता। विवाह हो भी जाए तो जातक का वैवाहिक सुख से वंचित रहना पड़ता है।
15. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल यदि शनि से दृष्ट हो तो विवाह में विलम्ब व ससुराल से खटपट रहती है।
16. तुलालग्न में राहु यदि सप्तम भाव मे मंगल की राशि में हो तो ऐसी स्त्री को वैधव्य दु:ख भोगना पड़ता है।
17. तुलालग्न में चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो, पाप ग्रह केन्द्र में हो शुभ ग्रह उन्हें न देखते हो तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व अन्य पुरुषों से संसर्ग करती है।
18. तुलालग्न में सप्तम भावस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो जातक में प्रबल कामवासना होती है। ऐसा जातक स्त्री के यौनांग का स्पर्श अपने मुंह से करता है। यदि ऐसे मंगल के साथ राहु हो तो जातक अपने आश्रम में रहने वाली सेविका से यौन संबंध रखता है।
19. तुलालग्न वाली कुण्डली में कुम्भ का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री की सहायता से अपनी कामपिपासा शान्त करती है अर्थात् अपने साथ रमण कराने के लिए अन्य स्त्री से पुरुष के समान आचरण कराती है। यदि यह योग पुरुष की कुण्डली में हो तो जातक समलैंगिक यौनाचार करता है।
20. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल यदि चर राशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहेगा। ऐसे में यदि बुध व शनि सप्तम भाव मे हो तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।
21. तुलालग्न में मंगल आठवें हो तो स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल होती है। ऐसी स्त्री प्रेम विवाह करती है तथा स्वच्छंद यौनाचार में विश्वास करती है।

22. तुलालग्न में लग्नस्थ सूर्य और मंगल यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।

23. तुलालग्न में द्वितीयेश मंगल शनि से युत हो एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, तो ऐसी स्त्री व्याभिचारिणी होती है।

24. तुलालग्न में चंद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की महिला होती है।

25. तुलालग्न में यदि सूर्य, मंगल, गुरु, चंद्र, बुध, शुक्र व शनि बलवान हों तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश पर पुरुष की अंकशयिनी बन सकती है।

26. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल यदि चर राशि (1/4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरन्तर प्रवास में रहता है।

27. जातक पारिजात के अनुसार तुलालग्न में उत्पन्न कन्याएं सुन्दर होती हैं। यदि चंद्रमा लग्न में हो तो ऐसी स्त्री पति की प्रिया प्राण-वल्लभा होती है।

28. तुलालग्न में स्वगृही शुक्र लग्न में हो तो "दिभार्या योग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

29. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों से सम्भोग करता है।

❑❑❑

तुलालग्न और धनयोग

तुलालग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धन प्रदाता ग्रह मंगल है। धनेश मंगल की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से सम्बन्ध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, मंगल एवं धनस्थान पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि सम्बन्ध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल सम्पत्ति को पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश शुक्र, पंचमेश शनि, भाग्येश बुध एवं लाभेश सूर्य की अनुकूल परिस्थितियां तुलालग्न वालों के लिए धन ऐश्वर्य एव वैभव को बढ़ाने में पूर्ण सहायक होती हैं।

तुलालग्न के लिए गुरु, सूर्य और मंगल अशुभ फल देते हैं। शनि, बुध शुभ होते है। चंद्र और बुध राजयोग कारक हैं। मंगल प्रधान मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। गुरु षष्टेश होने से अशुभ फलदायक है। गुरु परम पापी है। सूर्य व शुक्र भी पापी हैं। शनि अतिशुभ फलदायक है। मंगल साहचार्य से मारक का कार्य करेगा।

शुभयोग– 1. शुक्र+शनि, 2. शुक्र+बुध, 3. चंद्र+बुध,

सफल योग– 1. गु.+श. 2. बु.+श. 3. श.+चं., 4. मं.+श.

योगकारक–चंद्र, बुध, शनि।

निष्फल योग–मंगल + बुध

लक्ष्मी योग–मंगल द्वितीय, सप्तम या नवम में, सूर्य सप्तम या एकादश में, शनि केन्द्र त्रिकोण में।

विशेष योगायोग

1. तुलालग्न में शुक्र हो, शनि, बुध से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

2. तुलालग्न हो, पंचम स्थान में शनि हो, लाभ स्थान में सिंह का बुध हो तो जातक अपनी विद्या, हुनर के द्वारा लाखों रुपया कमाता हुआ, शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

3. तुलालग्न के पंचम स्थान में शनि तथा लाभ स्थान मे सिंह का मंगल हो तो जातक शहर का माना हुआ धनवान होता है।

4. तुलालग्न में बुध, मिथुन या सिंह राशि में हो तो जातक अल्प प्रदान से बहुत रुपया कमाता है। धन के मामले में ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली कहलाता है।

5. तुलालग्न में मंगल मेष, वृश्चिक या मकर राशि में हो तो व्यक्ति धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी चेरी की तरह उस व्यक्ति की सेवा करती है।

6. तुलालग्न में मंगल बुध के घर में तथा बुध मंगल के घर में हो तो अर्थात् बुध मेष या वृश्चिक राशि में हो तो तथा मंगल मिथुन या कन्या राशि में परिवर्तन योग करके बैठा हो तो व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा जीवन में खूब धन कमाता है।

7. तुलालग्न में मंगल यदि सूर्य के घर में तथा सूर्य मंगल के घर में हो अर्थात् मंगल, सिंह राशि का हो तथा सूर्य मेष या वृश्चिक का हो तो जातक महाभाग्यशाली होता है। ऐसे व्यक्ति की लक्ष्मी दासी के समान सेवा करती है।

8. तुलालग्न में यदि चंद्रमा केन्द्र-त्रिकोण में हो तथा मंगल स्वगृही हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर धीरे-धीरे अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है। यह स्थिति प्राय: 28 वर्ष के बाद होती है।

9. तुलालग्न में शुक्र, चंद्रमा और सूर्य की युति हो तो जातक महाधनी होता है तथा धनशाली व्यक्तियों में अग्रगण्य गिना जाता है।

10. तुलालग्न में शनि मकर या कुम्भ का हो तो जातक धनवान होता है।

11. तुलालग्न में शुक्र सिंह राशि में एवं सूर्य तुला राशि में हो तो जातक 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुये स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

12. तुलालग्न हो, लग्नेश शुक्र, धनेश मंगल, भाग्येश बुध तथा लाभेश सूर्य अपनी-अपनी उच्च एवं स्वराशि में हों तो जातक करोड़पति होता है।

13. तुलालग्न में धनेश मंगल यदि छठे, आठवें और बारहवें स्थान में हो तो ''धनहीन योग'' की सृष्टि होती है। जिस प्रकार से घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं

ठहर पाता। सदैव रुपयों की तंगी बनी रहती है। इस दुर्योग से बचने के लिए गले में अभियन्त्रित "मंगल यन्त्र" धारण करना चाहिए। पाठक चाहें तो "मंगल यन्त्र" हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

14. तुलालग्न में धनेश मंगल यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

15. तुलालग्न में मंगल यदि मेष या मकर राशि में हो तो "रूचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजतुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

16. तुलालग्न में सुखेश शनि, लाभेश सूर्य यदि नवम भाव में मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

17. तुलालग्न में गुरु + चंद्र की युति वृश्चिक, मकर, कुम्भ या मिथुन राशि में हो तो इस प्रकार के गणकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

18. तुलालग्न में धनेश मंगल अष्टम स्थान में एवं अष्टमेश शुक्र धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

19. तुलालग्न में तृतीयेश गुरु लाभ स्थान में एवं लाभेश गुरु तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

20. तुलालग्न में बलवान मंगल के साथ यदि चतुर्थेश शनि हो तो व्यक्ति को मातृपक्ष के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. गुरु धनु राशि का हो, बुध भाग्य भवन में तथा शनि स्वगृही हो तो जातक अतुल धनवान होता है।

22. जन्म का लग्न तुला हो तथा राहु, शुक्र, मंगल, शनि 12वें भाव में यानी कन्या राशि में हों तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

23. यदि लग्न में सर्वोत्तम नवांश हो और चंद्रमा भी वर्गोत्तम नवांश हो और लग्न को चंद्रमा के अतिरिक्त 4 अन्य ग्रह देखते हों, ऐसा जातक अधम से अधम घर में जन्म लेकर भी उत्तम शुभ सुख भोगता है, लक्ष्मीवान होता है।

24. तुलालग्न हो, पंचम भाव में शनि बैठा हो तो जातक का पुत्र गोद जाता है। वहां से उसे धन मिलता है।

25. शुक्र यदि केतु सहित द्वितीय भाव में हो तो जातक को निश्चय ही लक्ष्याधिपति बना देता है।

26. षष्टापति का तथा लग्नाधिपति का परस्पर परिवर्तन योग बनता हो तो जातक ऋण ग्रस्त रहता है।

27. शुक्र-शनि की युति धनु राशि में हो तथा गुरु की भाग्य भवन से दृष्टि हो, मंगल कर्क का हो तथा सूर्य व बुध चतुर्थ भावस्थ हों तो जातक अतुल धनवान होता है।

28. सूर्य मेष का सप्तम भाव में एवं चंद्रमा द्वादश भाव में हो, बुध शत्रु भाव में स्थित हो, गुरु की 5वीं दृष्टि चंद्रमा पर हो तो जातक मंत्री बनता है तथा खूब धनोपार्जन करता है।

29. तुलालग्न हो तथा मंगल यदि बलवान हो तो स्त्री पक्ष से अर्थ की प्राप्ति होती है।

30. तुलालग्न हो, शुक्र बली हो तो स्त्री संचित धन द्वारा सहायता करें।

31. पंचम स्थान में चंद्रमा हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को लॉटरी इत्यादि से यकायक धन मिलता है।

32. लग्नेश धन भाव में हो तथा धनेश अष्टमस्थ हो तो भूमि से धन प्राप्ति होती है।

33. सूर्य, बुध, मंगल व शनि एक साथ 10वें, 5वें 9वें भाव में हों तो जातक लक्ष्याधिपति होता है।

34. तुलालग्न में यदि बलवान मंगल पंचमेश शनि के साथ हो तथा द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

35. तुलालग्न में बलवान मंगल की यदि षष्टेश गुरु से युति हो तथा धन भाव शनि से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को पराजित करता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

36. तुलालग्न में बलवान मंगल की शुक्र से युति हो, सप्तम भाव में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

37. तुलालग्न में बलवान मंगल की नवमेश बुध से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य पक्ष से, सरकारी अधिकारियों, अनुबन्ध (ठेकों) से काफी धन कमाता है।

38. तुलालग्न में बलवान मंगल की दशमेश चंद्रमा से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलती है। पिता द्वारा सम्पादित धन की प्राप्ति होती है तथा पैतृक व्यवसाय से जातक को लाभ होता है।

39. तुलालग्न में दशम भवन का स्वामी चंद्रमा यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलता। ऐसा जातक जन्म स्थान पर नहीं कमाता, उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

40. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

41. धन स्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश सूर्य यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

42. तुलालग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

43. तुलालग्न में धनेश मंगल अस्त हो, नीच राशि (कर्क) में हो एवं धन स्थान तथा अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋण ग्रस्त रहता है।

44. तुलालग्न में लाभेश सूर्य यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो, लाभेश अस्तगत हो तथा पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

45. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है।

46. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

तुलालग्न एवं संतान योग

1. तुलालग्न में शनि पांचवें स्थान में बैठा हो तो पांच पुत्र होते हैं।
2. तुलालग्न में पंचमेश शनि आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
3. तुलालग्न में पंचमेश शनि अस्त हो या पाप ग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
4. तुलालग्न में पंचमेश शनि लग्न (तुला राशि) में हो, गुरु से युत या दृष्ट हो तो जातक की प्रथम सन्तति पुत्र ही होता है।
5. तुलालग्न में पंचमेश शनि कुम्भ राशि का हो तो जातक के पांच पुत्र होते हैं।
6. तुलालग्न में पंचमेश शनि लग्न में हो एवं लग्नेश शुक्र पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरों की सन्तान गोद में लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
7. तुलालग्न में पंचमेश शनि पंचम, षष्ठ या द्वादश भावों में हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र सन्तान नहीं होती, पर उपाय करने से इस योग की शांति हो जाती है।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं।
9. तुलालग्न में पंचमेश शनि कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में सन्तान की प्राप्ति होती है।
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पापग्रह हों तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश, शनि पापग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के साथ नष्ट हो जाता है।

12. तुलालग्न में पंचमेश शनि बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धवस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक संसार में विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख हो जाता है।

13. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. तुलालग्न में पंचमेश शनि की सप्तमेश मंगल से युति हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. चंद्रमा सिंह राशिस्थ हो तथा गुरु स्वराशि (9, 12) में हो तथा पाप व शुभ ग्रह 1/4/7/10 स्थानों में हो तो जातक 5 सन्तान को नाश करने वाला होता है।

16. जातक की कुण्डली में यदि गुरु, शुक्र और चंद्रमा तीनों मीन राशि में हों तो उसकी पत्नी के पुत्र अधिक होते हैं।

17. समराशि (2,4,6,8,10,12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

18. पंचमेश निर्बल हो, लग्नेश शुक्र भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक के सर्पदोष के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश की वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।

19. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक ''कालसर्प योग'' के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।

20. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृ दोष होता है तथा पितृ शाप के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।

21. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है। आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।

22. तुलालग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।

23. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है।

इस दोष के कारण जातक को पुत्र सन्तान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

24. तुलालग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सन्तान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

25. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि का युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

26. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा सन्तान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

27. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि हो सुति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

28. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

29. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली सन्तानों को उत्पन्न करती है।

30. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र सन्तान नहीं होती।

❑❑❑

तुलालग्न और राजयोग

1. यदि तुलालग्न अपने पूर्णांश पर उच्च के शनि से युक्त हो तो और साथ ही उच्च का एकाकी मंगल चतुर्थ स्थान में हो, उच्च सूर्य सप्तम स्थान में हो और उच्च का बृहस्पति दशम में अपने उच्चांश पर हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. उच्च का शनि लग्न में, सप्तम में तथा उच्च का गुरु दशम में हो ता या उच्च का शनि लग्न में, उच्च का मंगल चतुर्थ में और उच्च का सूर्य सप्तम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का शनि लग्न में हो, उच्च का मंगल चतुर्थ में और उच्च का गुरु दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का शनि लग्न में उच्च का सूर्य सप्तम में और स्वगृही कर्क का चंद्रमा दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. उच्च का शनि लग्न में और उच्च का बृहस्पति स्वगृही चंद्र के साथ दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का शनि लग्न में, उच्च का मंगल चतुर्थ और स्वगृही कर्क का चद्रमा दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का मंगल चतुर्थ, स्वगृही शनि पंचम, उच्च का सूर्य सप्तम तथा स्वगृही बुध नवम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
8. वृश्चिक का मंगल धन स्थान में, मकर का शनि चतुर्थ स्थान में, कर्क का चंद्रमा दशम स्थान में और सिंह का सूर्य एकादश या लाभ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
9. वृश्चिक का मंगल धन भाव में, मेष का सूर्य सप्तम भाव में, कर्क का बृहस्पति दशम में और उच्च का शनि लग्न में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

10. तुलालग्न में शुक्र शनि व कर्क का, गुरु दशम हो, कन्या का सूर्य द्वादश में बुध के साथ, मेष का मंगल सप्तम स्थान में, वृष का चंद्रमा अष्टम स्थान में पूर्ण हो जातक बड़ा आदमी बनता है।

11. गुरु तीसरे स्थान में हो शुकु छठे स्थान में हो तो शेष सभी ग्रह गुरु व शुक्र के मध्य हों तो यह एक उत्तम राजयोग होता है।

12. शुक्र, मंगल धन भाव में हो, गुरु मीन राशि में हो, तुला में बुध शनि व चंद्रमा नीच के क्रमशः मेष वृश्चिक में बैठे हों, तो यह निश्चित राजयोग होता है

13. व्ययेश बुध 1,2,4,5,9,10 भावों में से किसी भाव में हो तो उत्तम नौकरी का योग बनता है।

14. लग्नेश व जन्म राशि का अधिपति केन्द्र में हो तथा शुभ व मित्र ग्रहों से दृष्ट हो, शत्रु और पाप ग्रहों की दृष्टि न हो तथा जन्म राशि के स्वामी से चंद्रमा 9वें भाव में हो तो वह जातक एम. पी. या एम. एल. ए. होता है।

15. जन्म समय में सभी ग्रह योग कारक हों तो जातक राष्ट्रपति होता है। दो-तीन ग्रहों के योग कारक होने से राज्यपाल होने का योग बनता है यदि एक ग्रह भी अपने पंचमांश में हो तो एम॰ एल॰ ए॰ योग होता है।

16. तुलालग्न हो तथा गुरु उच्च, त्रिकोण या स्वराशि में स्थिति होकर चंद्रमा को सम्पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक को निश्चय ही मंत्री पद प्राप्त होता है।

17. यदि गुरु, बुध, चंद्रमा 2,5,11 वें भाव में हों, दो ग्रह षष्ट भाव में, शेष दो ग्रह सप्तम भाव में हों तो व्यक्ति राजदूत का पद प्राप्त करता है।

18. तुलालग्न हो तथा शुक्र द्वादश भाव में हो, शनि शत्रु भवन में हो सूर्य, चंद्र लग्न में हो तो जातक खूब धन प्राप्त करता है तथा कुशल नीतिज्ञ मंत्री होता है।

19. सूर्य, शुक्र, मकर राशि में चतुर्थ भाव से तथा चंद्र शनि दशम भाव में हों परस्पर दृष्टि डाल रहे होने से जातक को उत्तम धन योग व राजयोग होता है।

20. शनि प्रथम भाव में, मंगल उच्च का, सूर्य उच्च का 7वें भाव में हो तो जातक राज्य में उच्चाति उच्च पद प्राप्त करता है। यथा मंत्री होता है।

21. शनि षष्ट भाव में नीच का हो, पद वक्री व बलवान हो उस पर शनि की दृष्टि हो, सूर्य-चंद्र लग्न में हों तो असाधारण राजयोग बनता है।

22. लग्न की राशि तुला हो, चंद्र व शनि तथा शुक्र केन्द्र स्थानों में हों लग्नेश मकर राशि का हो, गुरु अष्टम भाव में हो, सूर्य व शुक्र की युति हो तो जातक राज्य में उच्च स्थान प्राप्त करता है।

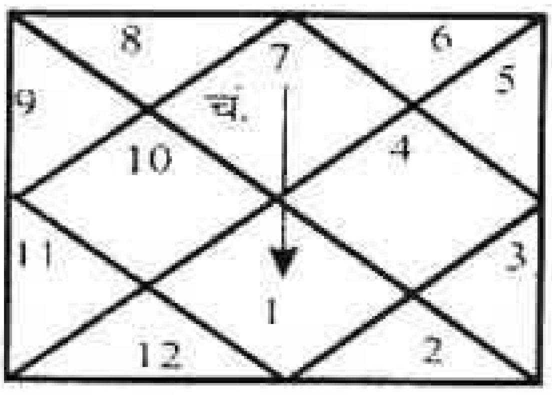
23. तुलालग्न में जन्म काल में तुला, धनु, मीन व लग्न में शनि बैठा हो तो जातक का राजकुल में जन्म और वह राजा होता है।

24. तुलालग्न में जलचर राशि में छठा चंद्रमा हो लग्न में उदित शुभ ग्रह और केन्द्र में पाप ग्रह न हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां प्रथम स्थान में चंद्रमा तुला राशि का होगा। ऐसा जातक विख्यात कवि, लेखक, कला संगीत मर्मज्ञ होता है। उसे संसार के सभी सुख ऐश्वर्य, भोग विलास की सामग्री सहज में प्राप्त हो जाती है।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि) पर होने से जीवन साथी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति के नेत्र कमनीय, चंचल व शरीर सुन्दर होता है। जातक सुन्दर, सौम्य और विनम्र स्वभाव का होगा।

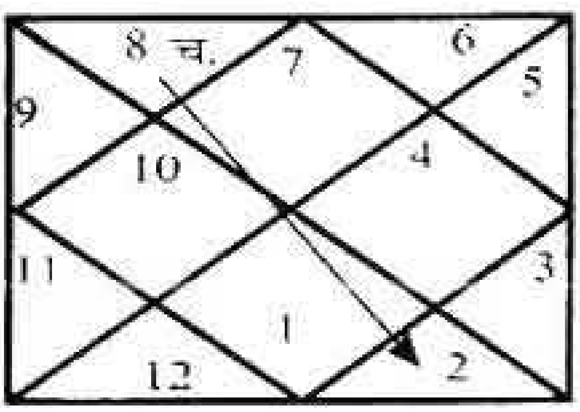
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चंद्र के साथ गुरु होने से तुलालग्न के प्रथम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पंचम स्थान, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। तुलालग्न में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है क्योंकि तुलालग्न के लिए बृहस्पति पापी ग्रह है। अशुभ फल प्रदाता है। फलत: ऐसे जातक के पराक्रम में न्यूनता आएगी। जातक की प्रथम सन्तति की मृत्यु होगी। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर अन्तिम रूप से सफल रहेंगे।
2. चंद्र के साथ सूर्य होने से तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने पर जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात: 6 से 8 बजे के मध्य

होगा। सूर्य+चंद्र की तुला राशिगत प्रथम स्थान में यह युति वस्तुत: दशमेश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलायेगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से सूर्य अशुभ फलदायक है। सूर्य लग्न में नीच राशि का भी है। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी फिर भी जातक पराक्रमी होगा। जातक की पत्नी सुंदर होगी।

3. तुलालग्न में यदि चंद्र के साथ बुध हो तो जातक के स्वयं के निर्णय विवादास्पद रहेंगे।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल होने से जातक महाधनी होगा।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक का व्यक्तित्व सुन्दर होगा। चेहरा भी सुन्दर होगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो 'शश योग' के कारण जातक चक्रवर्ती राजा के समान धनी होगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो यहां पर राहु की दशा में रोगोत्पत्ति होगी। जातक हठी होगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो जातक जिद्दी होगा। निर्णय संदिग्ध होंगे।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां चंद्रमा द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि का होगा जो कि इसकी नीच राशि है। इसके तीन अंशों तक यह परम नीच का होता है। परन्तु अपनी राशि में पांचवे स्थान पर होने के कारण नीच होते हुए भी चंद्रमा यहां शुभ फल देगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक राजमान्य, गुणी, धनी, अतिदानी और पिता के सुख से युक्त सम्पन्न व्यक्ति होगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक लंबी उम्र जीने वाला व्यक्ति होगा।

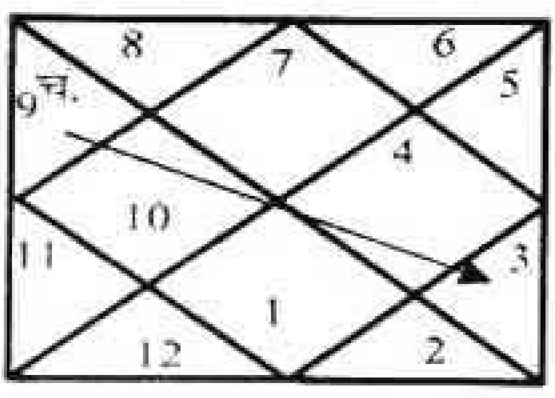
निशानी—जातक की वाणी विष बुझे के तीर की तरह विषैली होगी।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चंद्र के साथ गुरु तुलालग्न के द्वितीय स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह षष्टम स्थान, अष्टम स्थान एवं राज्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यह युति यहां ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक की आयु बढ़ेगी। राजपक्ष में प्रभाव बढ़ेगा। ऋण, रोग और शत्रु का भय तो रहेगा परन्तु इस शुभ योग के कारण जातक का बचाव होता रहेगा। मुसीबत में मदद मिलती रहेगी।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व प्रात: पांच बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की वृश्चिक राशिगत धन स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश होने से शुभ फलदायक है। जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से सूर्य प्रतिकूल है। चंद्रमा वहां नीच का होगा। ये दोनों ग्रह यहां धन हानि देने वाले हैं। अष्टम स्थन (वृष राशि) पर इनकी दृष्टि जातक के जीवन में रोग उत्पन्न कराने वाली है तथा आयु के लिए अनिष्ट सूचक है।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो 'नीचभंग राजयोग' एवं 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो धन का अपव्यय होगा। रोकना कठिन है।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख मिलेंगे।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो धन के घड़े में भारी छेद है।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो धन का अपव्यय होगा। संग्रह कठिन है।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहं पर तृतीयस्थ चंद्रमा धनु राशि में होगा जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है ऐसा जातक धन-धान्य, पद-प्रतिष्ठा से

युक्त, भाई व नौकरों से युक्त, पराक्रमी, गुणी व सत्यवक्ता होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक के भाग्य में 24 वर्ष की आयु के बाद दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती रहेगी।

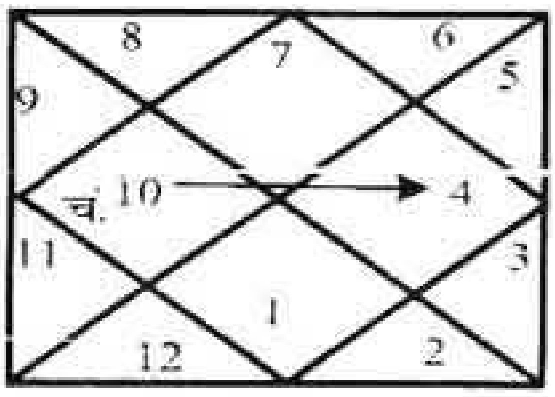
निशानी–ऐसा जातक कुछ क्रोधी स्वभाव का एवं महत्वकांक्षी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी, पराक्रम बढ़ेगा, नौकरी लगेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चंद्र के साथ गुरु होने से तुलालग्न के तृतीय स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्टेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति तुलालग्न के लिए पापी व अशुभ फलकर्त्ता है। परन्तु यहां तृतीय स्थान में धनु राशि में बृहस्पति स्वगृही होगा। जहां से वह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: आपका पराक्रम तेज रहेगा। विवाह के बाद शीघ्र आपका भाग्योदय होगा। आपकी गिनती भाग्यशाली लोगों में होगी। इस गजकेसरी योग के कारण आपको व्यापार-व्यवसाय में भी उचित लाभ होता रहेगा।
2. चंद्र के साथ सूर्य होने से तुलालग्न में चंद्र+सुर्य की युति तृतीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की धनु राशिगत तृतीय स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है। जबकि शुक्र का शत्रु होने के कारण सूर्य प्रतिकूल है। ये दोनों अग्नि संज्ञक राशि में होने से तृतीय स्थान के शुभ फल को नष्ट करेंगे पर इनकी दृष्टि भाग्य स्थान पर शुभ है। ऐसे जातक को भाई-बहन दोनों का सुख रहेगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो भाई-बहनों का सुख होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाई–बहनों का सुख होगा। बहन अधिक होंगी।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो बहनें अधिक होंगी।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो बहनें अधिक होंगी पर सभी सुखी होंगी।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो भाई-बहनों में विवाद रहेगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो परिजनों में अविश्वास रहेगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा दिग्बली होकर मकर राशि में होगा जो कि इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक माता-पिता, वृद्धजन के आदर-सत्कार, सेवा भाव में विश्वास रखता है। ऐसा जातक सुनीति एवं न्याय में विश्वास रखता है। जातक राजनीति में हस्तक्षेप रखता है।

दृष्टि–चतुर्थ भाव स्थित चंद्रमा की दृष्टि अपने स्वगृह (कर्क राशि) दशम भाव पर होगी। फलत: जातक को उत्तम मकान एवं वाहन का परिपूर्ण सुख मिलेगा।

निशानी–ऐसा जातक घर की आन्तरिक सजावट पर विशेष ध्यान देता है।

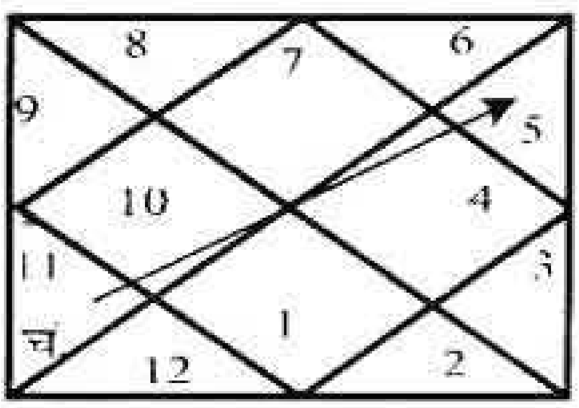
दशा–चंद्रमा की दशा सुख में वृद्धि करेगी। यह दशा उन्नति दायक एवं प्रतिष्ठा वर्धक होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के चतुर्थ स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां नीच तथा पापी भी है। परन्तु केन्द्रवर्ती होने से शुभ फलदायक होगा। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव, राज्य स्थान एवं व्यय भाव पर होगी। इस युति के कारण आपको माता का सुख मिलेगा, आयु लंबी होगी। धन खर्च बहुत होगा पर खर्चा शुभ होगा। जीवन में कोई कार्य रुका हुआ नहीं रहेगा। अन्तिम सफलता निश्चित है।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति चतुर्थ स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की मकर राशिगत चतुर्थ स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। भले ही वह सम्पत्ति ज्यादा मात्रा में न हो। ऐसे जातक के जीवन में वाहन दुर्घटना के द्वारा विकलांग होने का भय रहता है।

3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो यहां मंगल उच्च का 'रूचक योग', 'महालक्ष्मी योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पृथ्वीपति व धनवान होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य उत्तम पर माता के निर्णय ज्यादा ठीक नहीं होंगे।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक के पास एकाधिक वाहन होंगे।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो यहां शनि स्वगृही होने से 'शश योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पृथ्वीपति एवं धनवान होगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो वाहन में चोट पहुंचेगी। वाहन खर्चीला होगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां पंचम स्थान में चंद्रमा कुंभ राशि का होगा। चंद्रमा की यह स्थिति अपनी राशि में आठवें स्थान पर होने से थोड़ी अशुभ फलदायक है। जातक एकान्त प्रिय तथा थोड़ा ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है। ऐसा जातक धनी होता है। दार्शनिक होता है। ज्योतिष एवं अन्य रहस्यमय विद्याओं का ज्ञाता होता है।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को रहस्यमय विद्याओं व व्यापार से लाभ होगा।

निशानी–जातक को कन्या सन्तति अधिक होती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मध्यम फल देगी।

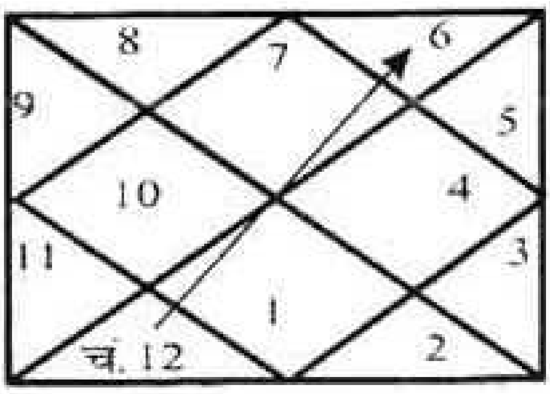
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के पंचम स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्टेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां पापी व अशुभ ग्रह होते हुए भी आपको शुभ सन्तति देगा। इसकी दृष्टि भाग्य भाव, लाभ भवन एवं लग्न स्थान पर है। फलतः आपके भाग्य का उदय किसी की मदद

से होगा। व्यापार-व्यवसाय में आपको समय-समय लाभ पर मिलता रहेगा। आपकी उन्नति चहुंमुखी होगी। एक साथ अनेक कार्यों से आपको लाभ होगा।

2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति पंचम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की कुंभ राशिगत पंचम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक की सन्तति का क्षरण होता है या मृत सन्तति हाथ लगती है।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो सन्तति का गर्भपात होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो शल्य चिकित्सा होगी, खासकर पत्नी की।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो पत्नी की शल्य चिकित्सा, सिजेरियन चाइल्ड सम्भव।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो शनि यहां त्रिकोण में स्वगृही होने से राजयोग बनता है।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो राहु यहां मानसिक उन्माद उत्पन्न करेगा। सन्तान में बाधा होगी।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो कन्या सन्तति ऑपरेशन से होगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम् स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां षष्ट स्थान में चंद्रमा होने से मीन राशि का होगा। चंद्रमा छठे जाने से 'राजभंग योग' बनेगा। जीवन मे नौकरी, व्यापार, रोजी-रोजगार के लिए संघर्ष की स्थिति रहेगी। जातक मानसिक परेशानी व तनाव में रहेगा। ऐसा जातक पिता सुख से हीन व शत्रुओं से तंग रहता है।

दृष्टि–छठे भाव में स्थित चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पर रहेगी। फलतः जातक खर्चों के प्रति चिन्तित रहेगा।

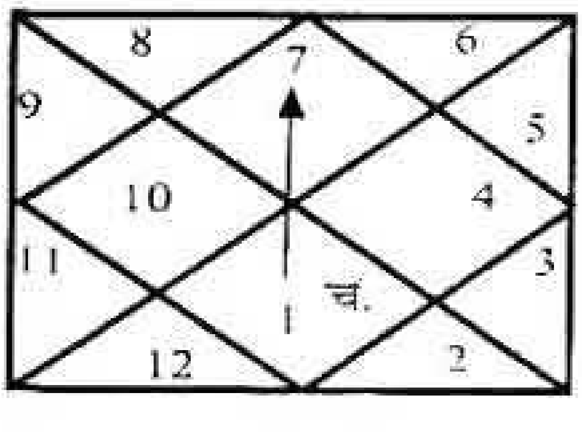
निशानी–जातक चतुर होने पर भी धन की कमी रहती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा रोग व शत्रुओं के प्रति सावधानी रखने की है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के षष्ट्म स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। तथा उसकी दृष्टि दशम भाव, व्यय स्थान एवं धन स्थान पर होगी। फलत: रोग का नाश होगा। यहां पर क्रमश: 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि दु:खद है। कोई अन्यतम मित्र, जिस पर आप ज्यादा भरोसा करते हैं, धोखा देगा। सरकार से, कोर्ट कचहरी से दण्ड भी मिल सकता है, सावधान रहें। फिर भी कुल मिलाकर आपको इस योग के कारण कोई गंभीर नुकसान नहीं होगा। प्रतिष्ठा बनी रहेगी।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति छठे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या रात्रि 8 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की मकर राशिगत चतुर्थ स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। चंद्रमा खड्डे में जाने से 'राजभंग योग' तथा सूर्य के खड्डे में जाने से 'लाभभंग योग' बना। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य प्राप्ति (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो पत्नी व गृहस्थ सुख में विवाद होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्योदय में रुकावट होगी।
5. तुलालग्न चंद्र के साथ में शुक्र हो तो प्रारम्भ में परिश्रम का फल नहीं पर अन्तिम सफलता जोरदार होगी।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो सुख-संसाधनों व सन्तति प्राप्ति में बाधा रहेगी।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो रोग, संघर्ष में मुक्ति नहीं मिलेगी।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो संघर्ष में वृद्धि होती रहेगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां सप्तम भाव चंद्रमा मेष राशि अपनी मित्र राशि में हैं। चंद्रमा की यह स्थिति स्वराशि में दशम, अर्थात् दशम भाव में होने से महत्वपूर्ण है। ऐसे जातक

सुन्दर आकर्षक व प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी होते हैं। जीवन साथी भी प्रभावशाली एवं सुन्दर होता है। जातक माता-पिता, राज्य, नौकरी-व्यवसाय व सन्तान से सुखी होता है।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव(तुला राशि) पर होने से जातक शीघ्र उन्नति करेगा।

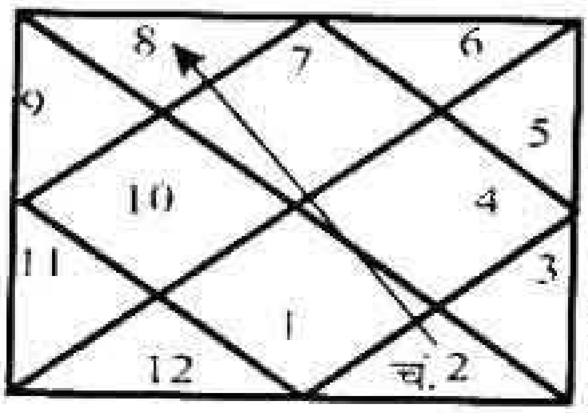
निशानी–जातक सत्य खोजी व अन्वेषण (अनुसंधान) में रुचि रखता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति, राजपद, प्रतिष्ठा एवं पिता की सम्पत्ति को प्राप्त करता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के सप्तम स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां दोनों केन्द्रस्थ होने से 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि कर रहे हैं। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर होगी। फलत: आपके कारोबार में आपको तरक्की-उन्नति मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में समय-समय पर धन की प्राप्ति होती रहेगी। और पराक्रम से, मित्र सर्किल, समाज में कीर्ति व यश की प्राप्ति होगी। बृहस्पति व चंद्रमा दोनों की दशाएं शुभ फल देंगी।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति सप्तम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म बैशाख कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होगा। सूर्य+चंद्र की मेष राशिगत सप्तम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। सूर्य यहां उच्च का है अत: 'रविकृत राजयोग' बना रहा है। चंद्रमा राज्येश होकर उच्चभिलाषी है। जातक महत्वाकांक्षी होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य व राजलक्ष्मी को भोगेगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो 'महालक्ष्मी योग' के कारण धन की बरकत रहेगी।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य बलवान रहेगा पर निर्णय विवादास्पद होंगे।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो जातक की उन्नति होती रहेगी।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक को सन्तान व शिक्षा का सुख मिलेगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो पति-पत्नी में समर्पण की भावना का अभाव रहेगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो पति-पत्नी में मनमुटाव रहेगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां अष्टमस्थ चंद्रमा वृष राशि का होगा। यह चंद्रमा की उच्च राशि है। इसके तीन अंशों तक चंद्रमा परमोच्च का होता है। चंद्रमा अष्टम में जाने से 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई। उच्च के चंद्रमा के कारण जातक दीर्घजीवी होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक कर्महीन एवं पर निन्दक होगा। जातक को धन की कमी चिन्तित करती रहेगी।

दृष्टि–अष्टम भावगत चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्च की अधिकता को लेकर चिन्तित रहेगा।

निशानी–जातक को माता-पिता के सुख में न्यूनता रहेगी।

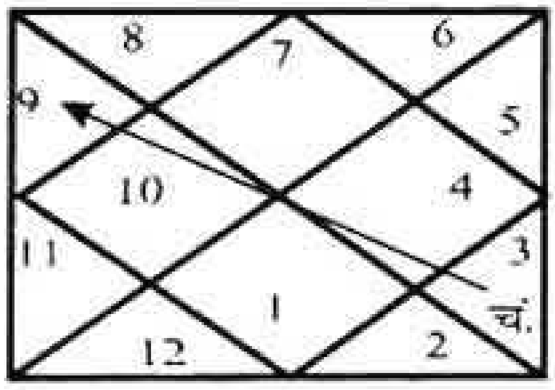
दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के अष्टम स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह की दृष्टि व्यय भाव, धन स्थान एवं सुख स्थान पर होगी। फलतः खर्च ज्यादा होगा। रुपयों की बरकत नहीं होगी तथा सुख प्राप्ति में कुछ न कुछ बाधा आती रहेगी। यहां बृहस्पति के कारण पराक्रमभंग योग एवं चंद्रमा के कारण राज्यभंग योग भी बन रहा है। इसका प्रभाव भी 40 प्रतिशत जातक के जीवन पर पड़ेगा अतः सरकारी अधिकारियों से न उलझें तथा मित्रों के साथ व्यवहार सही रखें।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति अष्टम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या सायंकाल 4 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की वृष राशिगत अष्टम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। सूर्य के खड्डे में गिरने से 'राजभंग योग' बना। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। हालांकि चंद्रमा यहां उच्च का होगा। जातक को राज्य, (सरकारी नौकरी) प्राप्ति एवं व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर संघर्ष करना पड़ेगा।

3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो धन का अभाव रहेगा। गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य में रुकावट पर अन्तिम सफलता।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो परिश्रम का लाभ विलम्ब से मिलेगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो शिक्षा व सन्तति में बाधा होगी।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो गुप्त रोग की सम्भावना तथा मानसिक पीड़ा रहेगी।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो जातक को मानसिक सन्ताप रहेगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां नवम भाव गत चंद्रमा मिथुन राशि में होगा। जो कि चंद्रमा की शत्रु राशि है। यहां दशमेश चंद्रमा अपनी राशि में द्वादश भाव में स्थित होकर जातक के जीवन में गौरव एवं प्रतिष्ठाशाली रोजगार की कमी दिलवाता है। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक राजकुलोत्पन्न राजा या राजपुरुष होता है। परन्तु पूर्वजों की प्रतिष्ठा कायम नहीं रख पाता।

दृष्टि–नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि तृतीय स्थान (धनु राशि) पर होगी फलत: जातक प्रबल पराक्रमी होगा।

निशानी–जातक का जन्म उच्चकुल में होगा।

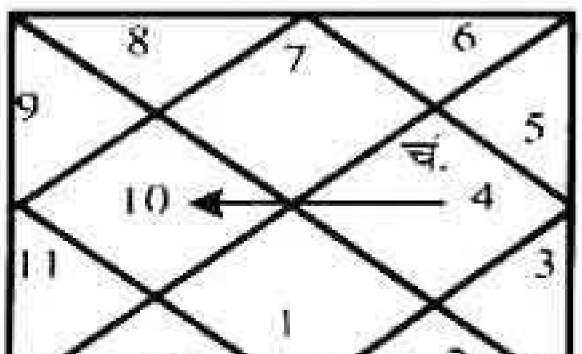
दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक शक्ति-सम्पन्न होगा तथा राजपद को प्राप्त करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चंद्र के साथ गुरु तुलालग्न के नवम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है तथा बृहस्पति पापी है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर है फलत: जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जाएगा जातक की उन्नति, भाग्योदय थोड़े संघर्ष के बाद होगा। जातक प्रजावान होगा। संघर्ष के बाद विजय मिलेगी। जीवन सफल रहेगा।

2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की मिथुन राशिगत नवम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। राज्येश चंद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। सुखेश सूर्य का भाग्य स्थान में बैठना शुभ है। जातक के भाग्योदय को लेकर संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी चंद्रमा पराक्रमी व धनी होगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो जातक धनी होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य में वृद्धि होती रहेगी।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो परिश्रम का लाभ बराबर मिलेगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक को शिक्षा व सन्तति का लाभ मिलेगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो धन प्राप्ति हेतु संघर्ष रहेगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो भाग्य में रुकावटें आएंगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। दशम भावगत चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। यहां 'यामिनीनाथ योग' 'पद्मसिहांसन योग' बनेगा। ऐसा जातक उत्तम नौकरी व्यवसाय को प्राप्त करता है। माता-पिता के सुख से युक्त, माता-पिता की सम्पत्ति को प्राप्त करता है। गुरु की भक्ति व शक्ति को प्राप्त करता है। जातक धनी व यशस्वी होता है।

दृष्टि–दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी फलत: जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। माता का घर, ननिहाल समृद्ध होगा।

निशानी–जातक की माता दीर्घायु होती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक अद्वितीय कीर्ति, धन, यश व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

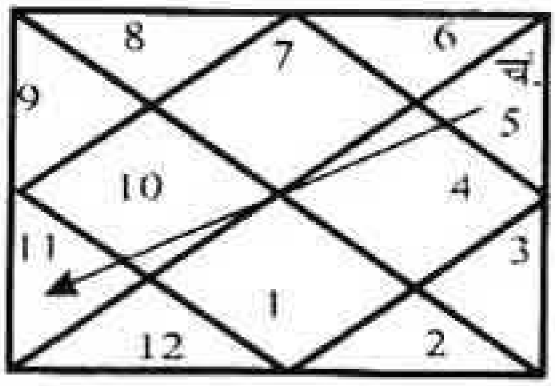
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के दशम स्थान में चंद्र के साथ गुरु की युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा स्वगृही का एवं

बृहस्पति उच्च का होगा। 'किम्बहुना योग' के कारण यह इस योग की सर्वोत्तम स्थिति है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि व धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव पर है। फलत: धन की प्राप्ति 24 वर्ष की आयु से होनी शुरु हो जाएगी। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। मां का सुख मिलेगा एवं जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा।

2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति दशम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को दिन के 2 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की कर्क राशिगत दशम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां स्वगृही होकर 'चंद्रकृत राजयोग' बनायेगा। सूर्य केन्द्रवर्ती होकर स्वगृहाभिलाषी होगा। ऐसा जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो यहां 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक महाधनी होगा। पराक्रमी होगा एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो जातक भाग्यशाली होगा पर भाग्योदय विलम्ब से होगा।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक आगे बढ़ेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा। सरकारी काम फटाफट होंगे।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक के पास एकाधिक वाहन व बंगले होंगे।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो सरकारी काम में बाधा, राजनीति के लाभ पर पीठ पीछे बदनामी होगी।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो जातक की उन्नति में छोटी-छोटी बाधाएं आती रहेंगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां एकादश भाव में चंद्रमा सिंह राशि में होगा जो कि उसके मित्र की राशि है। ऐसे जातक को पिता, राज्य नौकरी-व्यवसाय से, बड़े भाई से धन व यश

की प्राप्ति होती है। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक धन-पुत्र-पौत्रादि से युक्त होकर दीर्घजीवी होता है।

दृष्टि-सिंहस्थ चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी फलत: विद्या, बुद्धि एवं संतान के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

निशानी—जातक व्यवहार कुशल होगा तथा दूसरों से अपना काम निकलवाने में माहिर होगा।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को यथेष्ट लाभ की प्राप्ति होती रहेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. तुलालग्न के एकादश स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पराक्रम भाव, पंचम स्थान एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक का पराक्रम बढ़ेगा। उसे पुत्र सन्तति की प्राप्ति होगी। पत्नी सुन्दर मिलेगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या सुबह 10 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की सिंह राशिगत एकादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। यहां सूर्य स्वगृही होकर 'रविकृत राजयोग' बनायेगा व उत्तम सन्तति देगा। जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो जातक उद्योगपति व धनी होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो जातक भाग्यशाली व धनी होगा।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ता जाएगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो जातक महाधनी होगा। सन्तति उत्तम होगी।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो लाभांश में बाधा रहेगी।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो आध्यात्मिक सुख में वृद्धि पर भौतिक सुख में संघर्ष रहेगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां द्वादश स्थान में चंद्रमा कन्या